कालोऽस्मि

मैं समय हूँ

“ श्रीमद् भगवद् गीता ”

पर आधारित कैलेंडर- २०२५

himalayan meditation

हिमालयन मेडिटेशन द्वारा निःस्वार्थ सेवा (निष्काम सेवा)

निःस्वार्थ सेवा करना क्यों महत्वपूर्ण है ?

योगी कहते हैं कि अपने-अपने ऋणों को चुकता किए बिना कोई भी व्यक्ति आत्मज्ञानी नहीं बन सकता (उसका आध्यात्मिक विकास नहीं हो सकता)। निःस्वार्थ अथवा निष्काम सेवा करने से आपके ऋण चुकता होते हैं। सेवा आपको मानसिक स्तर पर स्पष्टता देती है, योगी इसे 'चित्तशुद्धि' कहते हैं और इस प्रकार करते-करते आप ध्यान की गहरी अवस्था को प्राप्त करते हैं। जब आप दूसरों की सेवा करते हैं तो आपको स्वतः ही आनंद की अनुभूति होती है। यही सृष्टि का नियम है। हिमालयन मेडिटेशन, सभी भौतिक सीमाओं से परे जाकर, निःस्वार्थ सेवा कर, सभी जीवात्माओं को सुख और आनंद प्रदान करने कार्य करता है। यह कैलेंडर निष्काम सेवा का ही एक उदाहरण है। हिमालयन मेडिटेशन में सेवकों ने अपनी-अपनी दिनचर्या से समय निकाल कर इस कैलेंडर को डिज़ाइन, प्रकाशित और वितरित किया है।

हिमालयन मेडिटेशन द्वारा की गईं निःस्वार्थ सेवाएँ इस प्रकार हैं:

- **यज्ञ सेवा**

कृतज्ञता- हिमालयी ऋषि न केवल त्योहारों पर, पूर्णिमा और अमावस्या के दिन समस्त देवताओं के प्रति अपना आभार व्यक्त करने के लिए यज्ञ करते हैं परन्तु जब-जब देश किसी भी प्राकृतिक आपदा से गुज़रता है, तब-तब स्थायी समाधान और शुद्धिकरण लाने के लिए ऋषि देवताओं से प्रार्थना करते हैं। अपनी इच्छानुसार यज्ञ सेवा में योगदान दें।
यूपीआई आईडी - thehimalayanseva@sbi

- **श्रीमद् भगवद् गीता सेवा**

हम, श्रीमद् भगवद् गीता का 180 से भी अधिक भाषाओं में अनुवाद कर रहे हैं और गीता के सही जप और अर्थ पर शिक्षा भी प्रदान कर रहे हैं, साथ ही श्रीमद् भगवद् गीता के ज्ञान को अपने दिनचर्या में कैसे लागु किया जाए इस पर भी शिक्षा देते हैं। व्यक्तिगत विकास के लिए श्रीमद् भगवद् गीता की सवा में हमसे जुड़ें।

- **मंदिर सेवा**

मानवता के लाभ के लिए हिमालयन मेडिटेशन के सेवक सक्रिय रूप से सभी मंदिरों में जाकर 'हनुमान हृदय मालिका' और शक्तिशाली 'अष्टकम्', स्तुति के बोर्ड लगाते हैं। हरि, गुरु कृपा और साधकों की भक्ति से, केवल एक ही वर्ष में हम 2,000 से अधिक बोर्ड लगा चुके हैं। आस-पास के मंदिरों में भी नियमित रूप से इन अत्यंत शक्तिशाली अष्टकम् का सामूहिक जप किया जाता है। यदि आप मंदिर सेवा में भाग लेना चाहते हैं, कृपया हमसे संपर्क करें।

- **वैदिक अनुसंधान**

क्या आप जानते हैं कि, आधुनिक अंतरिक्ष अनुसंधान का मूल, महर्षि भरद्वाज का प्राचीन विमान शास्त्र हैं? महर्षि भरद्वाज के विमान शास्त्र और भारत के अन्य अविश्वसनीय आविष्कारों, ज्योतिष, खगोल विज्ञान, धातुकर्म, सर्जरी, इंजीनियरिंग, वास्तुकला और वैदिक युग के विभिन्न विज्ञानों के विषय में जानने के लिए हमारी वैदिक अनुसंधान सेवा से जुड़ें।

- **हिमालयन किड्स**

हिमालयन किड्स सुचारु व सचेत परवरिश की ओर पहला पग है। बच्चों के जीवन को आकार देना मिट्टी को ढालने जैसा है इसीलिए यह महत्वपूर्ण है कि हम उनके प्रारंभिक वर्षों से ही उन्हें सही दिशा दें और समय के साथ उन्हें जीवन के सभी क्षेत्रों में सशक्त बनाएँ। हम बच्चों के लिए एक 'एकाग्रता-निर्माण कार्यक्रम' करते हैं जो उन्हें अपनी पढ़ाई में उत्कृष्टता प्राप्त करने, अच्छी आदतें बनाने और नैतिक रूप से अनुशासित होने में मदद करेगा। हम उन्हें श्लोक, मंत्र और हमारी संस्कृति और परम्पराओं के विषय में भी सिखाते हैं। सरल से यह ध्यान क्रियायें उन्हें तनाव, चिंता और दबाव से निपटने में मदद करते हैं। उनके भविष्य को संवारने में हमारी मदद कीजिए और हमसे जुड़िए।

- **कला और संस्कृति**

हम सभी को हमारे दयालु भगवान ने कुछ न कुछ प्रतिभा प्रदान की हैं, जैसे गायन, नृत्य, पेंटिंग, वॉयसओवर की कला, वीडियो व रील्स बनाना, या डिजिटल पेंटिंग करना। अपने कौशल को श्री हरि की सेवा में लगाने के लिए हमसे जुड़ें। अपनी प्रतिभा, कला और रचनात्मकता से हमारे इस सेवा कार्य में योगदान दें, कृपया हमसे संपर्क करें।

हमे लिखें: thehimalayanmeditation@gmail.com, ancient.bharat.calendar@gmail.com

संपर्क करें +91 8886344222, +91 7506910073

अधिक जानकारी और हमसे संपर्क करने ले लिए हमारी वैबसाइट देखें:
https://thehimalayanmeditationadipurusha.wordpress.com/

श्रद्धावाननसूयश्च शृणुयादपि यो नरः ।
सोऽपि मुक्तः शुभाँल्लोकान्प्राप्नुयात्पुण्यकर्मणाम् ॥

जो लोग इस ज्ञान (श्रीमद् भगवद् गीता) को पूर्ण श्रद्धा से और ईर्ष्या रहित होकर मात्र सुनते हैं, वे भी अपने पापों से मुक्त हो जाएँगे और उन शुभ लोकों को प्राप्त करेंगे जहाँ दिव्य लोग रहते हैं।

जनवरी

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
			पौष १ शु. द्वितीया	२ शु. तृतीया	३ शु. चतुर्थी	४ शु. पंचमी
५ शु. षष्ठी	गुरु गोविंद सिंह जयंती ६ शु. सप्तमी	७ शु. अष्टमी	८ शु. नवमी	९ शु. दशमी	पुत्रदा एकादशी १० शु. एकादशी	प्रदोष व्रत ११ शु. द्वादशी/ त्रयोदशी
स्वामी विवेकानंद जयंती १२ शु. चतुर्दशी	लोहड़ी १३ HM यज्ञ पूर्णिमा	पोंगल उत्तरायण मकर संक्रांति १४ माघ कृ. प्रतिपदा	माघ बिहू मट्टू पोंगल १५ कृ. द्वितीया	१६ कृ. तृतीया	संकष्टी चतुर्थी १७ कृ. चतुर्थी	१८ कृ. पंचमी
१९ कृ. पंचमी	२० कृ. षष्ठी	२१ कृ. सप्तमी	२२ कृ. अष्टमी	२३ कृ. नवमी	२४ कृ. दशमी	षटतिला एकादशी २५ कृ. एकादशी
गणतन्त्र दिवस २६ कृ. द्वादशी	प्रदोष व्रत २७ कृ. त्रयोदशी	२८ कृ. चतुर्दशी	२९ ● अमावस्या	३० शु. प्रतिपदा	३१ शु. द्वितीया	

। महत्सङ्गस्तु दुर्लभः ।

महत जनों का संग दुर्लभता से मिलता है ।

श्रीमद् भगवद् गीता कब और कहाँ लिखी गई थी ?

गणेश गुफा, बद्रीनाथ में एक पवित्र गुफा है, जहाँ श्री गणेशदेव जी ने महर्षि व्यासदेव जी के कथन के अनुसार महाभारत लिखी। पवित्र सरस्वती नदी के तट पर माणा गाँव में व्यास गुफा के समीप स्थित, गणेश गुफा के आस-पास का वातावरण शुद्ध और दर्शनीय है।

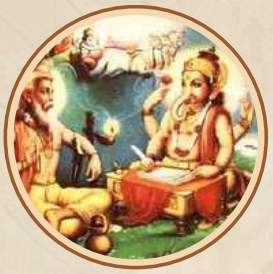

यह पवित्र गुफा जहाँ श्री गणेशदेव जी ने महाभारत महाकाव्य (जिसमें श्रीमद् भगवद् गीता वर्णित है) की रचना की, वर्तमान समय (वर्ष 2025) से लगभग 5000 वर्ष पुरानी है।

यह कहानी हमें वापस इतिहास के उस पन्ने पर ले जाती है जब भगवान विष्णु जी के अवतार महर्षि व्यासदेव जी ने आने वाले कलियुग में मानवता की भलाई के लिए महाभारत लिखने की इच्छा की। महर्षि व्यासदेव जी ने इस महान कार्य को सम्पन्न करने के लिए श्री गणेशदेव जी से सहयोग माँगा। वे इस कार्य के लिए सहमत हो गए। हालांकि, श्री गणेशदेव जी ने एक अनूठी शर्त रखी कि महर्षि व्यासदेव जी को बिना किसी रुकावट के इस महाकाव्य का वर्णन करना होगा और वह इसे साथ-साथ लिखेंगे। बदले में, महर्षि व्यासदेव जी ने कहा कि श्री गणेशदेव को लिखने से पहले प्रत्येक श्लोक को समझना होगा।

इस समझौते के साथ, महाभारत लिखने का यह विशाल कार्य आरंभ हुआ। महर्षि व्यासदेव जी के कथन पर, श्री गणेशदेव जी ने महाभारत को सावधानीपूर्वक लिखा। इस बीच श्री गणेशदेव जी ने संध्या वंदना भी की।

वे दोनों इस कार्य को सुचारु रूप से करते रहे परन्तु अचानक एक असंभावित बाधा उत्पन्न हुई। कार्य के बीच में श्री गणेशदेव जी की लेखनी टूट गई। वे नहीं चाहते थे कि एक नई लेखनी को ढूंढने में थोड़ा भी समय व्यय हो इसीलिए उन्होंने अपने ही एक दाँत को तोड़ दिया और महाभारत को पूरा करने के लिए उसका लेखनी के रूप में उपयोग किया। जैसे-जैसे महाभारत के द्रष्टा महर्षि व्यासदेव जी, सुंदर किन्तु जटिल श्लोक सुना रहे थे वैसे-वैसे श्री गणेशदेव जी उन्हें शीघ्रता से लिख लेते।

कलियुग में लोगों को मुक्ति पाने में सहायता करने के लिए श्री गणेशदेव जी का ऐसा अटूट दृढ़ संकल्प था। महर्षि व्यासदेव जी को सहयोग देने की उत्सुकता में, उन्होंने महाभारत के सफल समापन को सुनिश्चित किया।

आप को यह जान कर आश्चर्य होगा कि श्री गणेशदेव जी जब महर्षि व्यासदेव जी द्वारा कथित श्लोकों को लिख रहे थे तब वह गणेश गुफा में थे और महर्षि व्यासदेव जी पास ही एक और गुफा में थे जिसे व्यास गुफा कहा जाता है। दोनों ही गुफाएँ अब तीर्थ स्थल हैं।
हिमालयन मेडिटेशन ने गणेश गुफा में सफलतापूर्वक 'श्री गणपति रक्षा कवचम्' के बोर्ड की स्थापना की।

व्यासदेव गुफा का बहुत धार्मिक महत्व है। यह वह जगह है जहाँ महर्षि व्यासदेव जी ने 18 पुराणों को लिखा और वेदों को चार भागों में वर्गीकृत किया - ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। यहीं पर भाषयम् लिखने हेतु, श्री आदि शंकराचार्य जी, महर्षि व्यसदेव जी से ब्रह्मसूत्र पर प्रवचन सुनने के लिए मिले।

गणेश गुफा तक कैसे पहुँचे ?

गणेश गुफा बद्रीनाथ धाम से लगभग 4 कि.मी. दूर स्थित है। बद्रीनाथ पहुँचने पर, आपको माणा गाँव के लिए एक छोटी 3 कि.मी. की ट्रेक शुरु करनी होगी या आप वैकल्पिक रूप से वहाँ पहुँचने के लिए टैक्सी ले सकते हैं। फिर माणा से, 1 कि.मी. की चढ़ाई आपको गणेश गुफा तक ले जाएगी।

भीम पुल - स्वर्ग का मार्ग

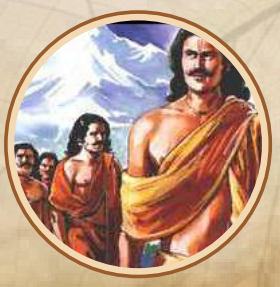

स्वर्गारोहिणी, यह वह स्थान है जहाँ से पाण्डवों ने स्वर्ग की अपनी यात्रा आरंभ की थी। इस यात्रा के दौरान, वे सरस्वती नदी को पार नहीं कर पा रहे थे तब भीम ने एक विशाल चट्टान को उठाया और उसे नदी में रख दिया। इसलिए इसे बाद में भीम पुल के नाम से जाना जाने लगा। यह पुल माणा गाँव में व्यासदेव गुफा के सामने स्थित है और इस प्राचीन घाटी का एक मनमोहक दृश्य प्रस्तुत करता है।

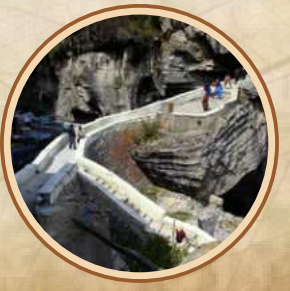

व्यासप्रसादाच्छ्रुतवानेतद्गुह्यमहं परम् ।
योगं योगेश्वरात्कृष्णात्साक्षात्कथयत: स्वयम्॥

महर्षि व्यासदेव जी की कृपा से मैंने स्वयं योगेश्वर श्री कृष्ण से
इस सर्वोच्च और सबसे गुप्त योग को सुना है।

फरवरी

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
						१ शु. तृतीया
वसन्त पंचमी २ शु. चतुर्थी/ पंचमी	३ शु. षष्ठी	रथ सप्तमी ४ शु. सप्तमी	भीष्म अष्टमी ५ शु. अष्टमी	६ शु. नवमी	७ शु. दशमी	जया एकादशी ८ शु. एकादशी
प्रदोष व्रत ९ शु. द्वादशी	१० शु. त्रयोदशी	११ शु. चतुर्दशी	गुरु रविदास जयंती १२ HM यज्ञ पूर्णिमा	१३ फाल्गुन कृ. प्रतिपदा	१४ कृ. द्वितीया	१५ कृ. तृतीया
संकष्टी चतुर्थी १६ कृ. चतुर्थी	१७ कृ. पंचमी	यशोदा जयंती १८ कृ. षष्ठी	छत्रपति शिवाजी महाराज जयंती १९ कृ. षष्ठी	२० कृ. सप्तमी	जानकी जयंती २१ कृ. अष्टमी	२२ कृ. नवमी
२३ कृ. दशमी	विजया एकादशी २४ कृ. एकादशी	प्रदोष व्रत २५ कृ. द्वादशी	महा शिवरात्रि २६ HM यज्ञ, अभिषेकम् कृ. त्रयोदशी	२७ कृ. चतुर्दशी ● अमावस्या	२८ शु. प्रतिपदा	

। विद्या ददाति विनयम् ।

ज्ञान से विनम्रता आती है।

himalayan meditation

श्रीमद् भगवद् गीता की उत्पत्ति के रहस्य, समय और स्थान को जानिए

सूर्यदेव (वर्तमान सूर्यदेव का नाम विवस्वान है) ग्रहों के राजा हैं, और वे ऊष्मा और प्रकाश की आपूर्ति करके अन्य सभी ग्रहों को नियंत्रित कर रहे हैं। भगवान श्री कृष्ण, जिनके आदेश पर सूर्यदेव घूम रहे हैं, ने श्रीमद् भगवद् गीता के रहस्यमई ज्ञान को देने के लिए विवस्वान को अपना शिष्य चुना। गीता के इतिहास का पता हम महाभारत (शांति पर्व 348.51-52) से इस प्रकार लगा सकते हैं :

त्रेतायुगादौ च ततो विवस्वान् मनवे ददौ । मनुश्च लोकमूत्यर्थ सुतायेक्ष्वाकवे ददौ ॥
इक्ष्वाकृणा च कथितो व्याप लोकानवस्थितः। गमिष्यति क्षयान्ते च पुनर्नारायाणं नृप ॥

हमारा परमात्मा से क्या संबंध है, इसका ज्ञान त्रेतायुग के आरंभ में, विवस्वान ने अपने पुत्र मनु को दिया था। मनु, जिन्हें सभी मनुष्यों का पिता माना जाता है, ने यह ज्ञान अपने पुत्र महाराजा इक्ष्वाकु को दिया। महाराजा इक्ष्वाकु इस सम्पूर्ण पृथ्वी के राजा थे। रघु वंशी, महाराजा इक्ष्वाकु के वंशज थे, और रघु वंशियों में भगवान श्री राम का भी जन्म हुआ था। इस प्रकार श्रीमद् भगवद् गीता ग्रंथ महाराजा इक्ष्वाकु के समय से है।

वर्तमान समय में, हम कलियुग के पाँच हजार वर्षों से गुजरे हैं, जो 432,000 वर्षों तक चलता है। कलियुग से पहले, द्वापरयुग (864,000 वर्ष) था, और द्वापर से भी पहले त्रेतायुग (1,296,000 वर्ष) था। इस प्रकार, 21,65,000 साल पहले, मनु ने अपने पुत्र और शिष्य महाराजा इक्ष्वाकु को श्रीमद् भगवद् गीता सुनाई थी । वर्तमान मनु की आयु की गणना 311,040,000 वर्षों तक की जाती है, जिनमें से 120,960,000 बीत चुके हैं।

फिर इस ज्ञान को, भगवान श्री कृष्ण ने कुरुक्षेत्र की युद्ध भूमि में, लगभग 5,000 वर्षों पूर्व अर्जुन से कहा।
यह श्रीमद् भगवद् गीता के इतिहास का स्थूल अनुमान है।

ज्योतिसर - वह स्थान जहाँ श्रीमद् भगवद् गीता के दिव्य ज्ञान ने दुनिया को प्रकाशित किया

श्रीमद् भगवद् गीता के पहले ही श्लोक में कुरुक्षेत्र को धर्मक्षेत्र कहा गया है, अर्थात 'धर्म की युद्ध भूमि'।

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः। मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय ॥1.1॥

ज्योतिसर (कुरुक्षेत्र, हरियाणा का सबसे पूजनीय तीर्थ) वह स्थान है जहाँ अर्जुन को भगवान श्री कृष्ण से श्रीमद् भगवद् गीता का शाश्वत ज्ञान प्राप्त हुआ था।

शास्त्रों के अनुसार, कुरुक्षेत्र लगभग 48 कोस (1 कोस ~ 1.8 कि.मी.) के सर्किट में फैला हुआ है, जिसमें बड़ी संख्या में पवित्र स्थान, मंदिर और पवित्र नदियाँ हैं जो कई धार्मिक घटनाओं या अनुष्ठानों से, महाभारत युद्ध और कुरु राजवंश से संबंधित हैं।

कुरुक्षेत्र की यह 48 कोस की युद्ध भूमि सरस्वती और दृषद्वती नदियों के बीच है जो आज के हरियाणा के 5 जिलों में फैली हुई है, इनका नाम है कुरुक्षेत्र, कैथल, करनाल, जींद और पानीपत।

एक अमर बरगद का वृक्ष - दिव्य गीत, श्रीमद् भगवद् गीता का साक्षी

ज्योतिसर में 5,000 वर्षों पुराना एक वृक्ष है और ऐसा माना जाता है कि भगवान श्री कृष्ण ने इसी वृक्ष के पास अर्जुन को श्रीमद् भगवद् गीता का ज्ञान दिया था।

भीष्म कुंड

कुरुक्षेत्र युद्ध के 10वें दिन पितामह भीष्म, युद्ध के मैदान में एक स्थान पर गिर गए, और उन्होंने प्यास लगने पर पानी माँगा। अर्जुन ने धरती पर तीर छेद कर पानी का स्त्रोत बना डाला जिसे बाद में बाणगंगा के नाम से जाना जाने लगा। इस जल कुंड को भीष्म कुंड कहा जाता है।

ज्योतिसर में, महाभारत को एक विस्मयकारी 3-डी लाइट एंड साउंड शो के माध्यम से दिखाया जाता है। पर्यटक और स्थानीय लोग रंगों और रोशनी के इस जीवंत प्रदर्शन से इतिहास को अनुभव करने के लिए प्रतिदिन इकट्ठा होते हैं। यह बहु-संवेदी प्रदर्शन, फिल्म, लाइट, साउंड और पानी का उपयोग कर दिव्य कथाओं में जान डालता है। जैसे ही सूर्य ढलते हैं, तब पर्यटक इस आकर्षक कार्यक्रम को देखने ज्योतिसर के सुंदर और रहस्यमई परिसर में इकट्ठा होते हैं। इस शो के निर्माताओं ने गहराई से शोध कर, मनोरम दृश्यों के रूप में, श्रीमद् भगवद् गीता और महाभारत को दर्शाया है, जिससे दर्शक पूरी तरह से मंत्रमुग्ध हो जाते हैं।

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया ।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिन: ॥

हे अर्जुन! एक तत्वदर्शी के शरण में जाओ और उनकी सेवा करो, फिर हाथ जोड़कर उनसे अपने प्रश्न पूछो, वे तुम्हें उपदेश देंगे जिसका तुम्हें पालन करना होगा।

मार्च

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उगादि गुड़ी पड़वा चैत्र नवरात्रि घट स्थापना ३० शु. प्रतिपदा	गौरी पूजा मत्स्य जयंती ३१ शु. द्वितीया/ तृतीया					फुलेरा दूज रामकृष्ण जयंती १ शु. द्वितीया
२ शु. तृतीया	३ शु. चतुर्थी	४ शु. पंचमी	५ शु. षष्ठी	६ शु. सप्तमी	७ शु. अष्टमी	८ शु. नवमी
९ शु. दशमी	आमलकी एकादशी १० शु. एकादशी	प्रदोष व्रत ११ शु. द्वादशी	१२ शु. त्रयोदशी	होलिका दहन अट्टकल पोंगल १३ शु. चतुर्दशी	चैतन्य महाप्रभु जयंती होली चन्द्र ग्रहण पूर्ण HM यज्ञ १४ पूर्णिमा	चैत्र १५ कृ. प्रतिपदा
भाई दूज १६ कृ. द्वितीया	संकष्टी चतुर्थी १७ कृ. तृतीया/ चतुर्थी	१८ कृ. चतुर्थी	रंग पंचमी १९ कृ. पंचमी	वसंत विषुव २० कृ. षष्ठी	२१ कृ. सप्तमी	२२ कृ. अष्टमी
२३ कृ. नवमी	२४ कृ. दशमी	पापमोचनी एकादशी २५ कृ. एकादशी	पापमोचनी एकादशी २६ कृ. द्वादशी	प्रदोष व्रत २७ कृ. त्रयोदशी	२८ कृ. चतुर्दशी	सूर्य ग्रहण अंशिक २९ अमावस्या

। दुस्सङ्गः सर्वथैव त्याज्यः ।

व्यक्ति को बुरा संग त्यागना चाहिए।

himalayan meditation

उपनिषद् - श्रीमद् भगवद् गीता का मूल

श्रीमद् भगवद् गीता वह अमृत है जो स्वयं सर्वोच्च, दिव्य, भगवान श्री कृष्ण के श्रीमुख से सीधा प्रकट हुआ है। सर्वोच्च भगवान ने अर्जुन को वेदों और उपनिषदों का सार बहुत ही सरल ढंग से समझाया। इसीलिए श्रीमद् भगवद् गीता की तुलना दूध से और उपनिषदों की तुलना गाय से की जाती है। गीता ध्यानम् में एक सुन्दर श्लोक है :

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपाल नन्दनः ।
पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत् ॥

सभी उपनिषद् गायों की भांति हैं, श्री कृष्ण हैं दोग्धा यानि वे जो गाय से दूध निकालते हैं; पार्थ (अर्जुन) बछड़े की भांति हैं और वे सभी जिनका चित्त शुद्ध हो गया है, इस अमृतमय दूध यानी गीता को पीने वाले हैं। आइए कुछ उदाहरण देखें:

जो सभी प्राणियों को परमात्मा में और सभी प्राणियों में परमात्मा को देखता है, वह कभी भी उनसे (परमात्मा से) दूर नहीं जाता है।
जो योगी मुझ परमात्मा को सभी प्राणियों में देखता है और सभी प्राणियों को परमात्मा में देखता है, मैं उससे और वह मुझसे कभी भी लुप्त नहीं होता।

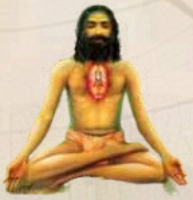

यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्येवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते॥ (ईशोपनिषद् 6)

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति॥ (गीता 6.30)

नवद्वारे पुरे देही हंसो लेलायते बहिः।
वशी सर्वस्य लोकस्य स्थावरस्य चरस्य च॥ (श्वेताश्वतर उप. 3.18)

सर्वकर्माणि मनसा संन्यस्यास्ते सुखं वशी।
नवद्वारे पुरे देही नैव कुर्वन्न कारयन्॥ (गीता 5.13)

जो हंस इस पूरे विश्व के शासक हैं, जिनके बस में चलायमान और स्थिर सब कुछ है, वही इस नवद्वारों वाली देह में वास करते हैं और बाहर की ओर उड़ जाते हैं।
वह अपने सभी कर्म फलों का त्याग कर आत्मसंयमी हो गया है। इस नवद्वारों वाली भौतिक शरीर में रहकर भी आनंद में रहता है। न तो वह अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए कोई कर्म करता है और न ही किसी और से भी करवाता है।

इंद्रियों के परे, उनके विषय हैं; विषयों के परे मन है और मन से भी परे आत्मा होती है, जिसे महत (महान) कहा जाता है।
भौतिक शरीर से इंद्रियाँ बलवान हैं, इंद्रियों से मन बलवान है, और मन से बुद्धि बलवान है किंतु इच्छाओं के सामने बुद्धि भी काम करना बंद कर देती है।

इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः।
मनसस्तु परा बुद्धिर्बुद्धेरात्मा महान्परः॥ (कठोपनिषद् 1.3.10)

इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः॥ (गीता 3.42)

सर्वतः पाणिपादं तत् सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्।
सर्वतःश्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति॥
(श्वेताश्वतर उप. 3.16, गीता 13.13)

सर्वोच्च, दिव्य पुरुष के हाथ, पैर, सिर, मुँह, आँखें और कान सभी दिशाओं और लोकों में फैले हुए हैं।

स्वयं इंद्रियों से परे, वह इंद्रियों की क्रियाओं के माध्यम से चमकते हैं। वे सभी के शासक हैं; वे सबका आश्रय हैं। वे महान हैं।
यद्यपि सभी इंद्रियाँ प्रत्येक कार्य करने में सक्षम हैं, फिर भी वे सभी इंद्रियों से अनासक्त रहते हैं और सभी प्राणियों का पालन करते हैं। वे तीनों गुणों से परे हैं किन्तु फिर भी सभी गुणों का अनुभव करते हैं, वे परमात्मा हैं।

सर्वेन्द्रियगुणाभासं सर्वेन्द्रियविवर्जितम्।
सर्वस्य प्रभुमीशानं सर्वस्य शरणं वृहत्॥ (श्वेताश्वतर उप. 3.17)

सर्वेन्द्रियगुणाभासं सर्वेन्द्रियविवर्जितम्।
असक्तं सर्वभृच्चैव निर्गुणं गुणभोक्तृ च॥ (गीता 13.14)

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः।
तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति॥
(श्वेताश्वतर उप. 3.18)

न तद्भासयते सूर्यो न शशांको न पावकः।
यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम॥ (गीता 5.13)

वहाँ सूर्य प्रकाशित नहीं होते, चंद्रमा, तारे, विद्युत और अग्नि भी नहीं। केवल सर्वोच्च परमात्मा ही प्रकाशित हैं, सब कुछ उनके प्रकाश से ही प्रकाशित हो जाता है।
उस स्थान पर प्रकाश के लिए सूर्य, चंद्रमा और अग्नि की भी आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह स्थान स्वयं प्रकाशमान है। एक बार कोई वहाँ चला जाता है, फिर इस भौतिक संसार में कभी वापस नहीं लौटता। वह स्थान मेरा परम धाम है।

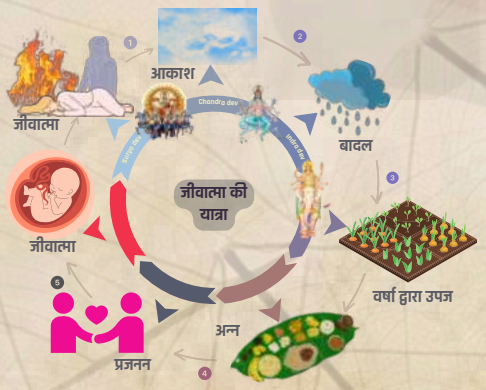

असौ वै लोकोऽग्निर्गौतम तस्यादित्य एव समिद्रश्मयो धूमोऽहरर्दिशोऽङ्गारा अवान्तरदिशो विस्फुलिङ्गास्तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ देवाः श्रद्धां जुह्वति तस्या आहुत्यै सोमो राजा संभवति॥ (9)
पर्जन्यो वाग्निर्गौतम तस्य संवत्सर एव समिदभ्राणि धूमो विद्युदर्चिरशनिरङ्गारा ह्रादुनयो विस्फुलिङ्गास्तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ देवाः सोमं राजानं जुह्वति तस्या आहुतेर्वृष्टिः संभवति॥ (10)
अयं वै लोकोऽग्निर्गौतम तस्य पृथिव्येव समिदग्निर्धूमो रात्रिरर्चिश्चन्द्रमा अङ्गारा नात्राणि विस्फुलिङ्गास्तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ देवा वृष्टिं जुह्वति तस्या आहुत्या आन्न संभवति॥ (11)
पुरुषो वाऽग्निर्गौतम तस्य व्यात्तमेव समित्प्राणो धूमो वागर्चिश्चौरङ्गाराः श्रोत्रं विस्फुलिङ्गास्तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ देवा अन्नं जुह्वति तस्या आहुत्यै रेतः संभवति॥ (12)
योषा वा अग्निर्गौतम तस्या उपस्थ एव समिल्लोमानि धूमो योनिरर्चिर्यदन्तः करोति तेऽङ्गारा अभिनन्दा विस्फुलिङ्गास्तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ देवा रेतो जुह्वति तस्या आहुत्यै पुरुषः संभवति स जीवति यावज्जीवत्यथ यदा म्रियते॥ (13)
अथैनमग्नये हरन्ति तस्याग्निरेवाग्निर्भवति समित्समिद्धूमो धूमोऽर्चिरर्चिरङ्गारा अङ्गारा विस्फुलिङ्गा विस्फुलिङ्गास्तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ देवाः पुरुषं जुह्वति तस्या आहुत्यै पुरुषो भास्वरवर्णः संभवति॥ (14)
(बृहदारण्यकोपनिषद् 12.6.2.9-12.6.2.14)

बृहदारण्यकोपनिषद् के यह श्लोक (12.6.2.9 - 12.6.2.14 तक) उन 5 यज्ञों की व्याख्या करते हैं जो जीव के जन्म के लिए इस प्रकृति में होते हैं। गीता में ऐसा ही एक श्लोक है

अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसंभवः।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः॥ (गीता 3.14)

शारीरिक उपनिषद् और गर्भोपनिषद्, क्षेत्र (शरीर), क्षेत्रज्ञ और 3 गुणों (सत्व, रज, तम) के विषय में बताते हैं। इसकी स्पष्ट व्याख्या श्रीमद् भगवद् गीता के अध्याय-13,14 में भी पाई जाती है। यह उदाहरण भी यही स्पष्ट करता है कि उपनिषद् गीता का मूल हैं।

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम् ।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ॥

हे अर्जुन! मन वास्तव में बहुत बलवान है, इसमें कोई संदेह नहीं।
परन्तु, अभ्यास और वैराग्य से तुम अपने मन को नियंत्रित कर सकते हो।

अप्रैल

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
		१ शु. चतुर्थी	२ शु. पंचमी	यमुना छट ३ शु. षष्ठी	४ शु. सप्तमी	५ शु. अष्टमी
श्री राम नवमी ६ HM यज्ञ शु. नवमी	७ शु. दशमी	कामदा एकादशी ८ शु. एकादशी	९ शु. द्वादशी	प्रदोष व्रत १० महावीर जयंती शु. त्रयोदशी	११ शु. चतुर्दशी	हनुमान जन्मोत्सव १२ HM यज्ञ पूर्णिमा
वैशाख १३ कृ. प्रतिपदा	बैसाखी १४ सौर नववर्ष कृ. प्रतिपदा	१५ कृ. द्वितीया	संकष्टी चतुर्थी १६ कृ. तृतीया	१७ कृ. चतुर्थी	१८ कृ. पंचमी	१९ कृ. षष्ठी
२० कृ. सप्तमी	२१ कृ. अष्टमी	२२ कृ. नवमी	२३ कृ. दशमी	वरुथिनी एकादशी २४ वल्लभाचार्य जयंती कृ. एकादशी	प्रदोष व्रत २५ कृ. द्वादशी	२६ कृ. त्रयोदशी/ चतुर्दशी
२७ ● अमावस्या	२८ शु. प्रतिपदा	परशुराम जयंती २९ शु. द्वितीया	अक्षय तृतीया ३० शु. तृतीया			

। राम रघुनाथ पदौ भजे ।

भगवान राम के श्री चरणों में मेरा प्रणाम है।

संथ सरल गीता

उद्देश्य

हमारे ब्रह्माण्ड के आरंभ में सह निर्माता ब्रह्मदेव ने किस प्रकार जीना चाहिए, किस प्रकार मरना चाहिए, धार्मिक जीवन कैसे जीना चाहिए, सभी विषयों पर व्याख्यान (संस्कृत भाषा में) वेदों में किया और साथ ही उन्होंने विभिन्न कलाओं, विज्ञान और ब्रह्मविद्या आदि का उल्लेख भी किया। संस्कृत को देव भाषा कहा जाता है क्योंकि यह वह भाषा है जिसका उपयोग हमारे ग्रह (भूलोक) और अन्य सभी छः उच्च ग्रहों पर किया जाता है। अतः हमारे ऋषियों द्वारा लिखे गए सभी ग्रंथ संस्कृत में हैं।

सामान्य मनुष्य के लिए कलियुग के वर्तमान समय में विभिन्न कारणों की वजह से इस दिव्य भाषा को समझना बहुत ही कठिन है।

इस समस्या को दूर करने के लिए संथ सरल गीता ने धरती पर हिमालय की उसी भूमि पर जन्म लिया, जहाँ महर्षि व्यासदेव जी ने श्री गणेशदेव जी को श्रीमद् भगवद् गीता संस्कृत में सुनाई थी। सरल भाषा में कहें तो संथ सरल गीता, श्रीमद् भगवद् गीता (मूल संस्कृत) की ही पुत्री है जो सरलीकृत संस्कृत भाषा, जिसे संथ भाषा कहा जाता है, में लिखी गई है। जप करते-करते ही सभी को श्रीमद् भगवद् गीता का बोध हो, यही संथ सरल गीता का उद्देश्य है।

जन्म कथा

हिमालय की गोद में, पवित्र नदी सरस्वती में डुबकी लगाते समय एक हिमालयी ऋषि, सर्वोच्च श्री कृष्ण के सेवक, श्री कृष्णदास जी ने उच्च चेतना की स्थिति प्राप्त की और बहुत समय तक उसी पारलौकिक स्थिति में लीन रहे। माँ सरस्वती का आशीर्वाद प्राप्त करने के पश्चात्, वे हिमालय के शिखर की ओर गए, और फिर व्यासदेव गुफा के भीतर स्वयं को पुनः ध्यान की गहरी अवस्था में लीन कर लिया। इसके तुरंत बाद श्री कृष्ण और स्वयं महर्षि व्यासदेव जी के आशीर्वाद से, उन्होंने श्रीमद् भगवद् गीता के श्लोकों को सरल ढंग से गाना शुरु कर दिया। वही श्लोक संथ सरल गीता के रुप में संकलित हैं।

सार और दिव्यता

इस कलियुग के अंधकार को दूर करने के लिए, संथ सरल गीता को अलौकिक शक्तियों का आशीर्वाद है जो इसका जप करने वाले प्रत्येक व्यक्ति में श्री कृष्ण भक्ति पैदा देता है। यह इतने सरल ढंग से लिखी गई है कि जो कोई भी इसे बार-बार पढ़ता है, उसे उन श्लोकों का अर्थ स्वतः ही समझ में आ जाता है। संथ सरल गीता का प्रत्येक अध्याय संस्कृत श्रीमद् भगवद् गीता से मेल खाता है किन्तु अंत में एक अतिरिक्त श्लोक है जो उस अध्याय का सारांश है। संथ सरल गीता नवाक्षरी छंद में लिखी गई है, अर्थात हर श्लोक की प्रत्येक पंक्ति में 9 अक्षर हैं।

संथ सरल गीता एक ऐसी भाषा में लिखी गई है जो संथों की भाषा है और इसे समाज के सभी वर्गों द्वारा समझा जा सकता है चाहे वह बंगाली, पंजाबी, असमिया, उड़िया, तमिळ, तेलुगु, मळयाळी आदि कोई भी हों। अधिकांश शब्द लगभग सभी भारतीय भाषाओं में उपयोग किए जाते हैं जैसे भक्त, मत, संयुक्त, सर्वदा, श्रेष्ठ, चित्त, निरंतर, परम, श्रद्धा आदि।

आइए देखें कि संस्कृत के सुंदर छंदों को समझने के लिए संथ भाषा कितनी सरल है

एवं सततयुक्ता ये भक्तास्त्वां पर्युपासते ।
ये चाप्यक्षरमव्यक्तं तेषां के योगवित्तमाः ॥
श्रीमद् भगवद् गीता (१२.१)

जे भक्त संयुक्त चित्तरे। तुमकु सर्वदा सुमरे॥
जे नर निष्ठाबान होई। अब्यक्त ब्रह्म उपासई॥
एमंत दुहिँन्क मध्यरे। के अटे श्रेष्ठ तुमठारे॥
संथ सरल गीता (१२.१)

एक भक्त जो पूरी श्रद्धा से सीधा आपकी पूजा करता है और एक भक्त जो आपके अव्यक्त रुप की पूजा करता है, इन दोनों भक्तों में से श्रेष्ठ कौन हैं?

शब्दार्थ:-

- जे - जो
- संयुक्त - जुड़कर, मिलकर
- चित्तरे - चित्त से / मन से
- तुमकु - तुम्हें, तुम को
- सर्वदा - हमेशा, सदा
- सुमरे - सिमरन करना
- जे नर - जो मनुष्य
- निष्ठाबान - एकनिष्ठ होकर, दृढ़ निश्चय से
- अव्यक्त - जो व्यक्त नहीं है
- ब्रह्म - परमात्मा
- उपासई - उपासना/पूजा करना ['उपासना'- 'अपने इष्टदेवता की समीप (उप) स्थिति या बैठना (आसन)']
- एमंत - इन
- दुहिँन्क - दोनों के
- मध्यरे - मध्य में, बीच में
- के अटे - कौन है
- श्रेष्ठ - उत्तम
- तुमठारे - आपके अनुसार

भावार्थ:-

अर्जुन श्री कृष्ण से प्रश्न करते हैं कि जो भक्त चित्त से पूरी तरह जुड़कर हर समय (24*7, चलते वक्त, भोग लगाते वक्त, हर श्वास प्रश्वास में) आपकी (श्री कृष्ण) लीला, रुप, नाम को याद कर के गोविंद-गोविंद कहते हैं और केवल आपको ही सदा सिमरन करते हैं, और वहीं दूसरी ओर जो भक्त श्रद्धा से केवल अव्यक्त (जो व्यक्त नहीं है) ब्रह्म की उपासना करते हैं, यह सोचते हैं कि सर्वोच्च परमात्मा कोई शक्ति है (जैसे ब्रह्मवादी सोचते है भगवान ॐ नाद हैं, कोई बोलता है कि ज्योत हैं, कोई बोलता है कि एक शक्ति है और सभी कुछ उसी ब्रह्म से निकला है और वहीं जाकर लीन हो जाएगा), आपके अनुसार इन दोनो प्रकार के भक्तों के मध्य में श्रेष्ठ कौन हैं?

इच्छाद्वेषसमुत्थेन द्वन्द्वमोहेन भारत ।
सर्वभूतानि सम्मोहं सर्गे यान्ति परन्तप ॥

इच्छा और द्वेष से द्वंद्व उत्पन्न होता है जो सभी जीवों को भ्रमित कर देता है। यही कारण है कि जीव बार-बार इस मृत्यु संसार में जन्म लेते हैं।

मई

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
				१ शु. चतुर्थी	२ सूरदास, रामानुजाचार्य, आदि शंकराचार्य जयंती शु. पंचमी	३ गंगा सप्तमी शु. षष्ठी
४ शु. सप्तमी	५ सीता नवमी शु. अष्टमी	६ शु. नवमी	७ शु. दशमी	८ मोहिनी एकादशी शु. एकादशी	९ प्रदोष व्रत शु. द्वादशी	१० शु. त्रयोदशी
११ नृसिंह जयंती शु. चतुर्दशी	१२ बुद्ध पूर्णिमा, कूर्म जयंती, HM यज्ञ पूर्णिमा	१३ ज्येष्ठ नारद जयंती कृ. प्रतिपदा	१४ कृ. द्वितीया	१५ कृ. तृतीया	१६ संकष्टी चतुर्थी कृ. चतुर्थी	१७ कृ. पंचमी
१८ कृ. पंचमी	१९ कृ. षष्ठी/ सप्तमी	२० कृ. अष्टमी	२१ कृ. नवमी	२२ कृ. दशमी	२३ अपरा एकादशी कृ. एकादशी	२४ प्रदोष व्रत कृ. द्वादशी
२५ कृ. त्रयोदशी	२६ वट सावित्री कृ. चतुर्दशी	२७ ● अमावस्या शु. प्रतिपदा	२८ शु. द्वितीया	२९ महाराणा प्रताप जयंती शु. तृतीया	३० शु. चतुर्थी	३१ शु. पंचमी

। ईशा वास्यमिदं सर्वं ।

सब कुछ ईश्वर के लिए ही है।

श्रीमद् भगवद् गीता में यज्ञ

यज्ञ - एक परिचय

ब्रह्माण्डीय परिवर्तन एवं संचरण की प्रक्रिया को यज्ञ कहा जाता है। इसी प्रक्रिया से ब्रह्माण्ड की रचना, पालन एवं संहार होता है।
आइए इसे एक उदाहरण के माध्यम से समझते हैं। जब हम अपना भोजन खाते हैं, तो यह हमारे पेट में पहुँचता है जहाँ पाचन अग्नि या वैश्वानर अग्नि होती हैं। यह अग्नि भोजन को पचाती है और इसे हमारे शरीर की कोशिकाओं, अंगों और तरल पदार्थों में परिवर्तित कर देती है। इसलिए, पाचन की प्रक्रिया एक यज्ञ है जहाँ भोजन आहुति है और वैश्वानर अग्नि यज्ञ की अग्नि है।

अन्न से जीव आते हैं, वर्षा से अन्न आता है, वर्षा यज्ञ के कारण होती है और यज्ञ स्वयं एक कर्म है। वेदों में कर्म का वर्णन है।

अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भव: ।
यज्ञाद्भवतिपर्जन्यो यज्ञ: कर्मसमुद्भव: ॥ (3.14)

उद्देश्य

यज्ञ की प्रक्रिया घटित होने के लिए दो मुख्य आवश्यकताएँ होती हैं, प्रथम आहुति और दूसरी है यज्ञ की अग्नि। वेद और उपनिषद् हमें इस तथ्य का स्मरण करवाते हैं कि श्री कृष्ण स्वयं ही यज्ञ हैं, यज्ञपुरुष हैं, वे अधियज्ञ अर्थात् यज्ञ के अधिपति हैं और वे स्वयं को सदैव ही यज्ञ में अधिष्ठित करते हैं।

अधियज्ञोऽहमेवात्र देहे देहभृतां वर॥ (8.4) **तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्॥ (3.15)**

अहं क्रतुरहं यज्ञ: स्वधाहमहमौषधम् ।
मन्त्रोऽहमहमेवाज्यमहमग्निरहं हुतम् ॥ (9.16)

मैं क्रतु (अनुष्ठान), यज्ञ, वनस्पति (यज्ञ में उपयोग की जानेवाली जड़ी-बूटियाँ), श्राद्ध (पितरों को अर्पित किए जाने वाले द्रव्य), मंत्र, घी, और आहुति हूँ। मैं यज्ञ की अग्नि हूँ, यज्ञ की प्रक्रिया हूँ और सभी का मूल भी हूँ।

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धन: ।
तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसङ्ग: समाचर ॥ (3.9)

मनुष्य को सदैव ही यज्ञ (श्री कृष्ण) के निमित्त कर्म करना चाहिए। अन्य सभी कर्म, कर्म बंधन लाते हैं। अत: केवल यज्ञ के लिए कर्म करो, और यह तुम्हें सभी आसक्तियों से मुक्त कर देगा।

हमें यज्ञ क्यों करना चाहिए ?

हमारे चतुरानन ब्रह्मदेव ने यज्ञ करके इस संपूर्ण ब्रह्मांड की संरचना की। उन्होंने देवताओं और ऋषियों को यज्ञ के कुछ गूढ़ रहस्य भी बताए। जब मनुष्य यज्ञ करते हैं, तो देवता प्रसन्न होते हैं और जब देवता प्रसन्न होते हैं, तो वे उन्हें आशीर्वाद देते हैं और उनकी इच्छाओं को पूरा करते हैं। इस प्रकार देवताओं और मनुष्यों के बीच पारस्परिकता होती हैं। यज्ञ से समृद्धि भी आती है और उन्नति भी होती हैं।

सहयज्ञा: प्रजा: सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापति: ।
अनेन प्रसविष्यध्वमेषवोऽस्त्विष्टकामधुक् ॥ (3.10)

यज्ञ के प्रकार

अग्नि और आहुति के आधार पर यज्ञ कई प्रकार के होते हैं। श्रीमद् भगवद् गीता के अध्याय 3 और 4 में विभिन्न प्रकार के यज्ञों का उल्लेख किया गया है जैसे कि देव यज्ञ, पितृ यज्ञ, संयम यज्ञ, इन्द्रिय यज्ञ, तप यज्ञ, योग यज्ञ, ज्ञान यज्ञ आदि।

हे धनुर्धर ! यज्ञ अनेक प्रकार के होते हैं। कुछ लोग घी और अनाज आदि द्रव्य का उपयोग करके देव यज्ञ करते हैं। कुछ लोग ब्रह्माग्नि में जीवनशक्ति (प्राण) की आहुति देकर ब्रह्म यज्ञ करते हैं (ब्रह्माग्नी आज्ञा चक्र में स्थित है)

दैवमेवापरे यज्ञं योगिन: पर्युपासते ।
ब्रह्माग्नावपरे यज्ञं यज्ञेनैवोपजुह्वति ॥ (4.25)

हवन - आग ही यज्ञ की अग्नि है और आहुति घी है द्रव्य यज्ञ

तर्पण यज्ञ में जल आहुति के रूप में दिया जाता है द्रव्य यज्ञ

खाने से पहले या कोई भी कार्य करने से पहले एक शक्तिशाली श्लोक का जाप करना चाहिए -

ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम् ।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना ॥ (4.24)

ब्रह्म यज्ञ के कर्ता हैं जो घी की आहुति अग्नि में देते हैं। घी स्वयं ब्रह्म है और जिस अग्नि में उसे आहुति देते हैं, वह भी ब्रह्म है। इस आहुति का गंतव्य भी ब्रह्म ही हैं। यज्ञ की सारी प्रक्रिया ही ब्रह्म है।

योग यज्ञ - उच्च कोटि के योगियों द्वारा की जाने वाली उन्नत स्तर की क्रियाएँ, आइए उन में से कुछ पर एक दृष्टि डालें:

श्रोत्रादीनीन्द्रियाण्यन्ये संयमाग्निषु जुह्वति ।
शब्दादीन्विषयानन्य इन्द्रियाग्निषु जुह्वति ॥ (4.26)

कुछ लोग इंद्रियाँ यानी आँख, नाक, जिह्वा, त्वचा और कान को संयम की अग्नि में आहुति देकर संयम यज्ञ करते हैं। कुछ लोग मानसिक रूप से इंद्रियों की अग्नि में शब्द आदि इंद्रिय विषयों की आहुति देकर इंद्रिय यज्ञ करते हैं।

सर्वाणीन्द्रियकर्माणि प्राणकर्माणि चापरे ।
आत्मसंयमयोगाग्नौ जुह्वति ज्ञानदीपिते ॥ (4.27)

हे अर्जुन! कुछ सिद्ध योगी अपनी जीवनशक्ति (प्राण) को ब्रह्माग्नि (जो आज्ञा चक्र में स्थित है) में आहुति करके, अपनी इंद्रियों द्वारा किए गए सभी कर्मों की आहुति देते हैं।

अपाने जुह्वति प्राणं प्राणेऽपानं तथापरे ।
प्राणापानगती रुद्ध्वा प्राणायामपरायणा: ॥ (4.29)

कुछ योगी अपनी जीवनशक्ति को नियंत्रित करके अपान वायु रूपी घी को प्राण वायु रूपी अग्नि में तथा प्राण वायु रूपी घी को अपान वायु रूपी अग्नि में आहुति देते हैं और हे अर्जुन, कुछ अन्य योगी अपने भोजन को नियंत्रित करके अपने मन को शांत करते हैं, और सभी पापों से मुक्त होने के लिए प्राण वायु की आहुति प्राण वायु में ही दे देते हैं।

अपरे नियताहारा: प्राणान्प्राणेषु जुह्वति ।
सर्वेऽप्येते यज्ञविदो यज्ञक्षपितकल्मषा: ॥ (4.30)

यज्ञों की श्रेणियाँ

प्रकृति के तीन गुणों के अनुसार यज्ञ सात्विक, राजसिक और तामसिक हो सकता है। इन्हें अध्याय-17 में समझाया गया है।

अफलाकाङ्क्षिभिर्यज्ञो विधिदृष्टो य इज्यते ।
यष्टव्यमेवेति मन: समाधाय स सात्त्विक:॥ (17.11)

अभिसन्धाय तु फलं दम्भार्थमपि चैव यत् ।
इज्यते भरतश्रेष्ठ तं यज्ञं विद्धि राजसम्॥ (17.12)

विधिहीनमसृष्टान्नं मन्त्रहीनमदक्षिणम् ।
श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते॥ (17.13)

भगवान श्री कृष्ण कहते हैं, "हे अर्जुन, तीन प्रकार के यज्ञों के विषय में सुनो। जो यज्ञ फल की इच्छा किए बिना, मुझमें लीन होकर और शास्त्र विधि के अनुसार किया जाता है, वह सात्त्विक प्रकृति का होता है। कामना पूर्ति के उद्देश्य से और दिखावे के लिए जो यज्ञ किया जाता है वह राजसिक प्रकृति का होता हैं। जो यज्ञ शास्त्रों की विधि के अनुसार नहीं किया जाता, जिसमें मंत्रो का व्यतिक्रम हो और जो बिना श्रद्धा और रुचि के, ब्राह्मण को दक्षिणा और अन्नदान दिए बिना किया जाता है, वह तामसिक प्रकृति का होता है।"

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जना: पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥

हे पार्थ! जो सदैव मेरा ही चिंतन करता है, अपना मन मुझ में ही लगता है और मेरी ही उपासना करता है मैं उसे अप्राप्त वस्तु भी प्राप्त करवाता हूँ और साथ ही जो उसे पहले से ही प्राप्त है उसकी रक्षा भी मैं ही करता हूँ।

जून

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१ शु. षष्ठी	२ शु. सप्तमी	३ शु. अष्टमी	४ शु. नवमी	गंगा दशहरा ५ शु. दशमी	निर्जला एकादशी ६ शु. एकादशी	निर्जला एकादशी ७ शु. एकादशी
प्रदोष व्रत ८ शु. द्वादशी	९ शु. त्रयोदशी	वट पूर्णिमा व्रत १० शु. चतुर्दशी	कबीरदास जयंती ११ HM यज्ञ पूर्णिमा	आषाढ़ १२ कृ. प्रतिपदा	१३ कृ. द्वितीया	संकष्टी चतुर्थी १४ कृ. तृतीया
१५ कृ. चतुर्थी	१६ कृ. पंचमी	१७ कृ. षष्ठी	१८ कृ. सप्तमी	१९ कृ. अष्टमी	२० कृ. नवमी	योगिनी एकादशी २१ इंटरनेशनल योग दिवस सबसे लंबा दिन कृ. दशमी/ एकादशी
वैष्णव योगिनी एकादशी २२ कृ. द्वादशी	प्रदोष व्रत २३ कृ. त्रयोदशी	२४ कृ. चतुर्दशी	शनि जयंती २५ वट सावित्री व्रत अमावस्या	२६ शु. प्रतिपदा	२७ जगन्नाथ रथ यात्रा शु. द्वितीया	२८ शु. तृतीया
२९ शु. चतुर्थी	३० शु. पंचमी					

। सर्वे सन्तु निरामयाः ।

सब निरोगी रहें।

himalayan meditation

श्रीमद् भगवद् गीता के महत्वपूर्ण श्लोक

वही श्लोक संथ सरल गीता (एक हिमालयी ऋषि द्वारा विरचित) में बहुत ही सरल ढंग से लिखा गया है

देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा ।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति ॥ (2.13)

जेमन्त देही देहे थाए । नाना अवस्था देइजाए ॥
बाल यौवन जरामय । मरणे लभे नब देह ॥
एहा धीर ब्यक्ति जाणइ । मृत्युरे शोक न करइ ॥ (2.13)

जीवात्मा भौतिक शरीर में रहकर बाल्यावस्था, युवावस्था, वृद्धावस्था और मृत्यु के विभिन्न चरणों से गुज़रती है और पुनः एक नया शरीर प्राप्त करती है। एक बुद्धिमान व्यक्ति यह जानता है, इसलिए वह कभी भी किसी की मृत्यु पर शोक नहीं करता है।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥ (2.23)

शस्त्र छेदन असम्भव । ना अग्नि दहन सम्भव ॥
नपारे जल करि ओदा । जेह्ने कमल शुष्क सदा ॥
पबन नपारे शुखाइ । अशोष्य दिव्य तत्त्व एहि ॥ (2.23)

कोई भी शस्त्र जीवात्मा को काट नहीं सकता, न ही अग्नि उसे जला सकती है। जल इसे गीला नहीं कर सकता, वह तो कमल के समान शुष्क रहती है। इसे वायु सूखा नहीं सकती। जीवात्मा शाश्वत है, अचल है, सनातन है।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥ (2.47)

कमरे तुम अधिकार । फलरे नाहिँ धनुर्धर ॥
नरख कर्म फले मन । न हुअ केबे क्रियाहीन ॥ (2.47)

हे अर्जुन! तुम्हारा अधिकार केवल अपने कर्मों पर है, उनके फलों पर नहीं। अतः अपने कर्मों के फल के विषय में न सोचो और निष्क्रिय भी न रहो।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥ (4.7)
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥ (4.8)

जेबे जेबे कुन्तीनन्दन । धर्मर हुअइ पतन ॥
अधर्मर हुए उत्थान । मोहर हुए आगमन ॥ (4.7)
साधुन्क रक्षा मुँ करइ । पापीन्क नाश करे मुहिँ ॥
करे धर्मर संस्थापन । युगे युगे असि अर्जुन ॥ (4.8)

हे भारत! जब-जब धर्म का पतन होता है और अधर्म का उत्थान (बढ़ जाता है) होता है, तब-तब मैं धर्म की स्थापना के लिए, साधुओं की रक्षा के लिए और पापियों का नाश करने के लिए इस धरती पर आता हूँ, हर युग में आता हूँ।

मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये ।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ॥ (7.3)

सहस्र मध्ये जणे केहि । प्रयत्न करे सिद्धि पाइँ ॥
सिद्धन्क मध्ये जणे केही । मोते तत्त्वरे जाणिथाइ ॥ (7.3)

हजारों में से कोई एक मोक्ष पाने का प्रयास करता है और उन साधकों में से भी कोई एक ही मुझे वास्तव में जान पाता है।

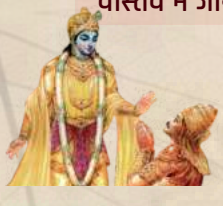

बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते।
वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः ॥ (7.19)

बहुत जन्म अन्तराले । ज्ञानी मानब जाणि बोले ॥
केबल सत्य बासुदेव । सेपरि महात्मा दुर्लभ ॥ (7.19)

बहुत जन्म लेने के पश्चात, एक बुद्धिमान व्यक्ति जान जाता है कि मैं, वासुदेव, ही शाश्वत सत्य हूँ। ऐसी पवित्र आत्मा (ऐसे महात्मा) इस संसार में दुर्लभ हैं।

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः॥ (9.26)

पत्र पुष्परे के पूजइ । फल बा जल देइथाइ ॥
भक्ति निमग्न चित्त होइ । जे भक्त मोते जाहादेइ ॥
ता'र उपहार ग्रहण । करिथाए मुहिँ अर्जुन ॥ (9.26)

हे अर्जुन! यदि कोई भक्त मुझे पूरे मन से पत्र, फल, फूल या जल अर्पित करता है, मैं उसे स्वीकार करता हूँ।

यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः ।
अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः ॥ (15.18)

से दीप्त पुरुष टि केहि । अर्जुन जाण मुँ अटइ ॥
जेहेतु मुहिँ क्षयरातीत । अक्षर ठारु मध्य श्रेष्ठ ॥
पुरुषोत्तम नामे स्थित । इहलोके बेदे वर्णित ॥ (15.18)

अर्जुन, तुम जान लो कि वह दीप्त पुरुष कोई और नहीं बल्कि मैं ही हूँ। क्योंकि मैं अविनाशी हूँ और अविनाशी पुरुष से बड़ा हूँ, मुझे वेदों में सर्वश्रेष्ठ पुरुष या पुरुषोत्तम के रूप में जाना जाता है।

न च तस्मान्मनुष्येषु कश्चिन्मे प्रियकृत्तमः ।
भविता न च मे तस्मादन्यः प्रियतरो भुवि ॥

जो लोग श्रीमद् भगवद् गीता का प्रसार करते हैं, उनसे बढ़कर कोई और मेरी सेवा नहीं कर सकता और न ही इन लोगों से अधिक मुझे धरती पर कोई प्रिय है।

जुलाई

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
		१ शु. षष्ठी	२ शु. सप्तमी	३ शु. अष्टमी	४ शु. नवमी	५ शु. दशमी
देवशयनी एकादशी ६ शु. एकादशी	७ शु. द्वादशी	प्रदोष व्रत ८ शु. त्रयोदशी	९ शु. चतुर्दशी	गुरु पूर्णिमा १० व्यासदेव पूजा HM यज्ञ पूर्णिमा	श्रावण ११ कृ. प्रतिपदा	१२ कृ. द्वितीया
१३ कृ. तृतीया	संकष्टी चतुर्थी १४ कृ. चतुर्थी	१५ कृ. पंचमी	१६ कृ. षष्ठी	१७ कृ. सप्तमी	१८ कृ. अष्टमी	१९ कृ. नवमी
२० कृ. दशमी	कामिका एकादशी २१ कृ. एकादशी	प्रदोष व्रत २२ कृ. द्वादशी/ त्रयोदशी	२३ कृ. चतुर्दशी	२४ ● अमावस्या	२५ शु. प्रतिपदा	२६ शु. द्वितीया
हरियाली तीज २७ शु. तृतीया	२८ शु. चतुर्थी	नाग पंचमी २९ शु. पंचमी	३० शु. षष्ठी	तुलसीदास जयंती ३१ शु. सप्तमी		

। नमो ब्रह्मणे ।

ब्रह्म को नमन है।

ब्रह्मदेव का जीवनकाल - श्रीमद् भगवद् गीता के दृष्टिकोण से

श्रीमद् भगवद् गीता में भगवान श्री कृष्ण ने हमारे ब्रह्माण्ड की सृष्टि व विनाश के विषय में कुछ रहस्यों का उल्लेख किया है और साथ ही साथ हमारे ब्रह्माण्ड के निर्माता ब्रह्मदेव के जीवनकाल का भी वर्णन किया है।

सहस्रयुगपर्यन्तमहर्यद्ब्रह्मणो विदुः ।
रात्रिं युगसहस्रान्तां तेऽहोरात्रविदो जनाः ॥ (8.17)

ब्रह्मदेव का एक दिन चार युगों (महायुग/चतुर्युग) के एक हजार चक्रों तक चलता है और ब्रह्मदेव की एक रात भी उतने ही समय (1000 महायुग/चतुर्युग) की होती है। जो व्यक्ति यह जानता है, वह देवताओं के दिन और रात की वास्तविकता को समझता है।

अव्यक्ताद्व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्त्यहरागमे ।
रात्र्यागमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्तसञ्ज्ञके ॥ (8.18)

ब्रह्मदेव के दिन के आरंभ में सभी जीव अव्यक्त स्रोत से बाहर आते हैं और ब्रह्मदेव की रात में, फिर से सभी जीव उसी स्रोत में पुनः लौट जाते हैं।

ब्रह्मदेव के जीवनकाल की गणना

- ब्रह्मदेव की आयु 100 ब्रह्मा वर्ष तक की होती है
- ब्रह्मदेव के 1 वर्ष में 360 दिन होते हैं
- ब्रह्मदेव के 1 दिन को 'कल्प' कहा जाता है

हमारे वेद कहते हैं कि ब्रह्मदेव अपने दिन के समय सृजन कार्य में व्यस्त रहते हैं और रात्रि के समय उनके द्वारा बनाए गए सभी जीव उन्हीं में विलीन हो जाते हैं (प्रलय)। अतः यह जीव, यह सृष्टि, केवल ब्रह्मदेव के दिन के समय ही अस्तित्व में रहते हैं

- ब्रह्मदेव के दिन का समय 1000 महायुग होता है। ब्रह्मदेव की रात्रि भी 1000 महायुग तक चलती हैं
- दिन के समय 14 मनु बदलते हैं। एक मनु के जीवनकाल को मन्वंतर कहा जाता है
- एक मन्वंतर में 71 या 72 महायुग/चतुर्युग होते हैं
- 1 महायुग चार युगों अर्थात सत्य, त्रेता, द्वापर और कलियुग का समूह है
- एक सम्पूर्ण महायुग की कालावधि 4,320,000 सौर/मनुष्य वर्ष है
- इस हिसाब से हर मन्वंतर की कालावधी है 4,320,000 x 71 = 306,720,000 सौर/मनुष्य वर्ष है
- 1 कल्प = 2,000 x 4,320,000 = 8,640,000,000 सौर वर्ष
- ब्रह्मदेव के 100 ब्रह्मा वर्षों के जीवनकाल के अंत में, सर्वोच्च परमात्मा सृजन के नए चक्र का आरंभ करने के लिए एक नए ब्रह्मदेव को नियुक्त करते हैं

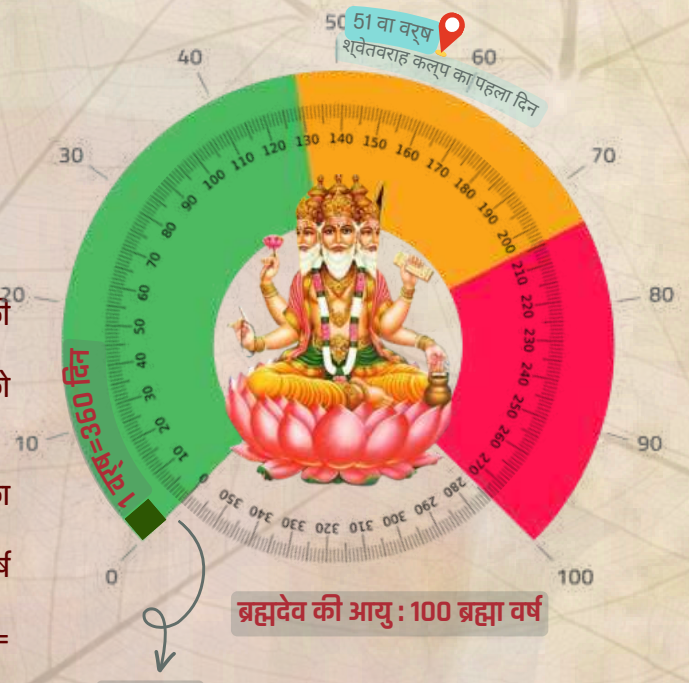

ब्रह्माजी का
1 दिन = 1 कल्प

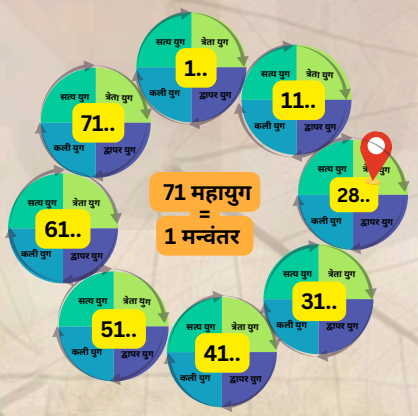

ब्रह्मदेव का जीवनकाल

= 2000 महायुग X 100 वर्ष X 360 दिन X 4,320,000 सौर वर्ष

= 311,040,000,000,000 सौर वर्ष i.e. 311 trillion years
(31 नील 10 खरब 40 अरब सौर वर्ष)

वर्तमान में हम ब्रह्मदेव के 51वें वर्ष के पहले दिन पर हैं
(चित्र में ब्रह्मदेव की वर्तमान आयु को लाल पिन से दर्शाया गया है)

अध्येष्यते च य इमं धर्म्यं संवादमावयो: ।
ज्ञानयज्ञेन तेनाहमिष्ट: स्यामिति मे मति: ॥

जो श्रीमद् भगवद् गीता का अध्ययन करते हैं, वे लोग ज्ञान यज्ञ करते हैं और ऐसा करने से सीधा मुझे ही पूजते हैं।

अगस्त

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राधा अष्टमी ३१ गौरी पूजन महालक्ष्मी व्रत आरंभ शु. अष्टमी					१ शु. अष्टमी	२ शु. अष्टमी
३ शु. नवमी	४ शु. दशमी	पुत्रदा एकादशी ५ शु. एकादशी	प्रदोष व्रत ६ शु. द्वादशी	७ शु. त्रयोदशी	वरलक्ष्मी व्रत ८ शु. चतुर्दशी	रक्षा बंधन ९ नारली पूर्णिमा संस्कृत दिवस HM यज्ञ पूर्णिमा
भाद्रपद १० कृ. प्रतिपदा	११ कृ. द्वितीया	संकष्टी अंगारकी चतुर्थी १२ कजारी तीज कृ. तृतीया	१३ कृ. चतुर्थी/ पंचमी	बलराम जयंती १४ कृ. षष्ठी	स्वतंत्रता दिवस १५ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी कृ. सप्तमी	दही हंडी १६ HM यज्ञ कृ. अष्टमी
१७ कृ. नवमी	१८ कृ. दशमी	अजा एकादशी १९ कृ. एकादशी	प्रदोष व्रत २० कृ. द्वादशी	पर्युषन पर्वारम्भ २१ कृ. त्रयोदशी	२२ कृ. चतुर्दशी	बैल पोळा २३ ● अमावस्या
२४ शु. प्रतिपदा	वराह जयंती २५ शु. द्वितीया	हरतालिका तीज २६ गौरी हब्बा शु. तृतीया	गणेश चतुर्थी २७ शु. चतुर्थी	ऋषि पंचमी २८ शु. पंचमी	२९ शु. षष्ठी	३० शु. सप्तमी

। सर्व कारणस्य कारणम् ।

आप (श्री कृष्ण) सर्व कारणों के कारण हैं ।

हमारे शास्त्रों में वर्णित अन्य गीताएँ

उद्धव गीता

उद्धव गीता श्रीमद् भागवत् महापुराण के पुस्तक 11, अध्याय 6, श्लोक 40 से शुरु होती है और अध्याय 29 पर समाप्त होती है। उद्धव गीता में श्री कृष्ण आध्यात्मिकता, धर्म, समाज के विभिन्न वर्गों और जीवन के चरणों के लिए आचार-विचार संबंधी दिशा निर्देश, भक्ति की सर्वोच्चता, आत्मज्ञान के विभिन्न मार्ग के विषय में बताते हैं और साथ ही मन को सभी दुखों का मूल कारण भी बताते हैं। यह ही नहीं वे और भी कई महत्वपूर्ण विषयों की व्याख्या करते हैं। इसमें 1,000 से अधिक श्लोक हैं।

देवी गीता

देवी भागवतम् के 7 वें स्कंद के अंतिम 10 अध्याय देवी गीता कहलाते हैं। राजा हिमालय के अनुरोध के पश्चात, देवी ने अपने प्रधान रूपों को उन्हें दिखाया जिसका वर्णन देवी गीता में है।

गणेश गीता

गणेश पुराण के क्रीड़ा खंड में वर्णित राजा वरेण्य और श्री गणेशदेव के मध्य की वार्तालाप ही गणेश गीता है। इस गीता में आध्यात्मिक ज्ञान का सार है जो श्रीमद् भगवद् गीता के उपदेशों के समान है।

गुरु गीता

गुरु गीता स्कंद पुराण का भाग है। यह महादेव और देवी पार्वती के बीच की एक वार्तालाप है जिसमें देवी पार्वती महादेव से गुरु तत्व के विषय में उन्हें सब कुछ सिखाने के लिए अनुरोध करती हैं।

हनुमद गीता

रावण को हराकर भगवान राम और माता सीता लंका से पुनः अयोध्या पहुँचे और तत्पश्चात भगवान राम का राज्य अभिषेक हुआ जिसके बाद माता सीता ने हनुमान जी को प्रवचन दिया जिसे हनुमद गीता कहते हैं।

विभीषण गीता

लंका के युद्ध क्षेत्र में श्री राम द्वारा विभीषण को दिए गए प्रवचन रामायण में वर्णित है जिसमें विभीषण को भगवान राम भक्ति, विश्वास और नैतिक मूल्यों के विषय में सिखा रहे हैं, इसे ही विभीषण गीता कहते हैं।

अष्टावक्र गीता

अष्टावक्र गीता आत्मा, बंधन और परम सत्य पर राजा जनक और ऋषि अष्टावक्र के बीच की वार्तालाप है। यह गीता हमे सिखाती है कि हम पहले से ही स्वतंत्र हैं और हमे केवल यह समझना है कि हम स्वतंत्र हैं। यह गीता अकर्म करने की सीख देती है, इच्छा को त्यागने और सांसारिक आसक्तियों से परे जाने को कहती है। यह हमे सिखाती है कि जीवन और मृत्यु के चक्र से स्वयं को मुक्त करने के लिए, व्यक्ति को सभी सांसारिक इच्छाओं और चिंताओं से परे हट जाना चाहिए।

अवधूत गीता

अवधूत गीता ऋषि दत्तात्रेय और श्री कार्तिकेय देव के बीच का संवाद है। कई लोग ऋषि दत्तात्रेय को प्रथम अवतार भी मानते हैं। वह ब्रह्मदेव, भगवान विष्णु और शिव जी के संयुक्त अवतार हैं। इस गीता को लगभग सभी ऋषियों द्वारा अद्वैत वेदांत पर सबसे बड़ा ग्रंथ माना जाता है।

कपिल गीता

कपिल गीता श्रीमद् भागवत् महापुराण में वर्णित है। यह ऋषि कपिल और उनकी माँ देवहुति के मध्य का संवाद है। उनकी माँ आध्यात्मिक ज्ञान के लिए तीव्र इच्छा रखती थीं।

हमारे शास्त्रों में कई अन्य गीताएँ उपलब्ध हैं जैसे: उत्तर गीता, पिंगला गीता, अनु गीता, ईश्वर गीता, मानकी गीता, पांडव गीता, पराशर गीता, शौनक गीता, राम गीता, रिभू गीता, रुद्र गीता, शिव गीता, श्रुति गीता, सूर्य गीता, वल्लभ गीता, व्याध गीता, हरि गीता, ब्रह्म गीता, वशिष्ठ गीता, व्यास गीता, बाका गीता, नारद गीता, विचक्षु गीता, संपाक गीता, सुत गीता इत्यादि।

य: शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारत: ।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् ॥

हे अर्जुन! जो व्यक्ति कामना के वश में आकर शास्त्र की विधि को नहीं मानता, उसे न तो सुख मिलता है और न ही कोई सिद्धि मिलती है। ऐसा व्यक्ति मोक्ष्य से बहुत दूर होता है, यह मेरा मत है।

सितम्बर

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
	गौरी पूजा १ शु. नवमी	२ गौरी विसर्जन शु. दशमी	परिवर्तिनी एकादशी ३ शु. एकादशी	वामन जयंती ४ शु. द्वादशी	प्रदोष व्रत शिक्षक दिवस ५ तिरुवोणम शु. त्रयोदशी	अनंत चतुर्दशी ६ गणेश विसर्जन शु. चतुर्दशी
चन्द्र ग्रहण पूर्ण ७ HM यज्ञ पूर्णिमा	अश्विन ८ पितृपक्ष आरंभ कृ. प्रतिपदा	९ कृ. द्वितीया	संकष्टी चतुर्थी १० कृ. तृतीया	११ कृ. चतुर्थी	१२ कृ. पंचमी	१३ कृ. षष्ठी/ सप्तमी
महालक्ष्मी व्रत पूर्ण १४ कृ. अष्टमी	१५ कृ. नवमी	१६ कृ. दशमी	इन्दिरा एकादशी १७ विश्वकर्मा पूजा कृ. एकादशी	१८ कृ. द्वादशी	प्रदोष व्रत १९ कृ. त्रयोदशी	२० कृ. चतुर्दशी
सर्व पितृ अमावस्या २१ अमावस्या	नवरात्रि आरंभ २२ घटस्थापना सूर्य ग्रहण आंशिक शु. प्रतिपदा	२३ शु. द्वितीया	२४ शु. तृतीया	२५ शु. तृतीया	ललिता पंचमी २६ शु. चतुर्थी	बिल्व निमंत्रण २७ शु. पंचमी
कल्पारंभ २८ शु. षष्ठी	नव पत्रिका पूजन २९ सरस्वती आवाहन शु. सप्तमी	दुर्गा अष्टमी सरस्वती पूजा ३० शु. अष्टमी				

। तमसो मा ज्योतिर्गमय ।

मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाएँ ।

himalayan meditation

विश्व भर में गीता मंदिर

गीता स्तूप, बेंटनविल, अर्कांसस, अमेरिका

यह गीता स्तूप कमल की पंखुड़ियों के आकार वाले 9 स्तूपों का एक गोलाकार गठन है, हर पंखुड़ी पर श्रीमद् भगवद् गीता के श्लोक अंकित हैं।

गीता मंदिर, सोमनाथ, गुजरात, भारत

इस गीता मंदिर में 18 स्तंभ हैं और प्रत्येक स्तंभ पर श्रीमद् भगवद् गीता का एक अध्याय अंकित है।

गीता मंदिर, पाटन, नेपाल

इस मंदिर का निर्माण 1637 ई. में राजा सिद्धि नरसिंह मल्ल ने श्रीमद् भगवद् गीता के सम्मान में करवाया था।

भगवद् गीता मंदिर, कुरुक्षेत्र, हरियाणा, भारत

यह मंदिर संगमरमर पत्थर से बनाया गया है और इसकी दीवारों पर श्रीमद् भगवद् गीता के श्लोक अंकित हैं।

गीता मंदिर, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत

इसे गीता मंदिर इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसका मुख्य कक्ष श्रीमद् भगवद् गीता के सभी श्लोकों से सुसज्जित है।

अश्रद्धया हुतं दत्तं तपस्तप्तं कृतं च यत् ।
असदित्युच्यते पार्थ न च तत्प्रेत्य नो इह ॥

बिना श्रद्धा के किए यज्ञ, तप और दान व्यर्थ हो जाते हैं और इस लोक या अन्य लोकों में भी निष्फल हो जाते हैं। ऐसे अनुष्ठान, शास्त्रों के अनुसार, असत् यानि अमान्य हैं।

अक्तूबर

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
			महा नवमी १ शु. नवमी	दुर्गा विसर्जन सरस्वती विसर्जन विजयदशमी २ दशहरा माधवाचार्य जयंती गांधी जयंती शु. दशमी	पापांकुशा एकादशी ३ शु. एकादशी	प्रदोष व्रत ४ शु. द्वादशी
५ शु. त्रयोदशी	कोजागिरी शरद पूर्णिमा ६ शु. चतुर्दशी	वाल्मीकि जयंती मीराबाई जयंती ७ HM यज्ञ पूर्णिमा / कृ. प्रतिपदा	कार्तिक ८ कृ. द्वितीया	९ कृ. तृतीया	संकष्टी चतुर्थी १० करवा चौथ कृ. चतुर्थी	११ कृ. पंचमी
१२ कृ. षष्ठी	राधा कुंड स्नान १३ कृ. सप्तमी	१४ कृ. अष्टमी	१५ कृ. नवमी	१६ कृ. दशमी	रमा एकादशी १७ गोवत्स द्वादशी कृ. एकादशी	प्रदोष व्रत धनतेरस १८ यम दीपम कृ. द्वादशी
काली चौदस १९ कृ. त्रयोदशी	नरक चतुर्दशी लक्ष्मी पूजन २० दिवाली कृ. चतुर्दशी ● अमावस्या	२१ ● अमावस्या	बली प्रतिपदा गुजराती नव वर्ष २२ गोवर्धन पूजा शु. प्रतिपदा	भाई दूज २३ शु. द्वितीया	२४ शु. तृतीया	२५ शु. चतुर्थी
२६ शु. पंचमी	छट पुजा २७ शु. षष्ठी	२८ शु. षष्ठी	२९ शु. सप्तमी	गोसप्तमी ३० शु. अष्टमी	३१ शु. नवमी	

। सहस्रशीर्षा पुरुषः ।

भगवान के सहस्र आनन हैं ।

विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम में श्रीमद् भगवद् गीता

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि श्रीमद् भगवद् गीता विश्व के कई कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जा रही हैं। ऐसे कॉलेज और विश्वविद्यालयों की गिनती हर वर्ष बढ़ती ही जा रही है और वे लोग अपने समाज में श्रीमद् भगवद् गीता सीखने से हुए अच्छे प्रभाव को भी अब देख पा रहे हैं।

श्रीमद् भगवद् गीता सीखने का कॉलेजी विद्यार्थियों पर क्या असर पड़ा यह एक शोध पत्र "कॉलेज के छात्रों पर भगवद् गीता पाठ्यक्रम का प्रभाव: विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं पर आधारित एक अध्ययन" ने दर्शाया जो वर्ष 2020 में जर्नल ऑफ रिलीजन एंड हेल्थ में प्रकाशित हुआ था। पेपर में कहा गया कि:

"विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं के विश्लेषण से पता चलता है कि प्रभाव विभिन्न स्तरों पर है जो मोटे तौर पर तीन श्रेणियों में रखा गया है: (1) तत्काल प्रभाव के रूप में विचारों की शुद्धि और श्रद्धा में बढ़ोतरी होना, (2) सोच में स्पष्टता, एकाग्रता वृद्धि, सामान्यता शांत और प्रसन्न स्वभाव होना, और (3) व्यक्तित्व गुणों पर दीर्घकालिक प्रभाव जैसे नेतृत्व और समस्या-समाधान क्षमताओं का विकास होना।"

- **ओ.सी.एच.एस (ऑक्सफोर्ड सेंटर फॉर हिंदू स्टडीज) पाठ्यक्रम - "भगवद् गीता"**

यह डॉ. लेने लिटिल द्वारा संचालित 7-सत्रीय पाठ्यक्रम है, जो 7 सप्ताह की अवधि में सम्पूर्ण होता हैं। इस पाठ्यक्रम में, छात्र श्रीमद् भगवद् गीता के हर एक अध्याय को गहराई से पढ़ते हैं और इसके मुख्य प्रसंगों को समझते हैं। यह कोर्स से उन्हें इस महान ग्रंथ का महत्त्व पता चलता हैं।

- **हार्वर्ड विश्वविद्यालय - "हिंदुइजम् थ्रू इट्स स्क्रिप्चर्स"**

यह हार्वर्ड विश्वविद्यालय द्वारा पढ़ाया जाने वाला 4-सप्ताह लंबा पाठ्यक्रम है जिसमें श्रीमद् भगवद् गीता पर पाठ सम्मिलित हैं।
यह पाठ्यक्रम नीलिमा शुक्ला-भट्ट और जेसन स्मिथ द्वारा संचालित किया जाता हैं। श्रीमद् भगवद् गीता अध्ययन इस पाठ्यक्रम का एक भाग है। यह कोर्स पवित्र वैदिक ग्रंथों के महत्वपूर्ण अंशों, आधुनिक लोगों द्वारा उनकी व्याख्याओं का परिचय देता है और विद्यार्थियों को वैदिक संस्कृति से जुड़ने का एक अवसर प्रदान करता हैं।

- **सेटन हॉल विश्वविद्यालय - "द जर्नी ऑफ ट्रांसफॉर्मेशन"**

इस कोर्स में छात्रों को श्रीमद् भगवद् गीता पढ़ाई जाती है जो इसके मुख्य पाठ्यक्रम का भाग हैं। विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय गीता सिंपोजियम 2020 में उन्होंने "आज के समय में श्रीमद् भगवद् गीता और मानवता" के विषय पर एक कार्यक्रम भी किया। उन्होंने अप्रैल 2023 में "भगवद् गीता - उपनिषदों का सार" पर एक व्याख्यान भी आयोजित किया।

- **इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, अहमदाबाद - "अंडरस्टैंडिंग भगवद् गीता: ए जर्नी टुवर्ड्स लीडरशिप एक्सीलेंस"**

इस कोर्स में श्रीमद् भगवद् गीता पर पाठ पढ़ाए जाते हैं जिससे विद्यार्थियों को नैतिक और बिजनेस मॉडल से सुसंगत मैनेजमेंट प्रैक्टिसेज को बढ़ावा देने के कई तरीके पता चलते हैं।

- **बिट्स पिलानी - "श्रीमद् भगवद् गीता"**

यह पाठ्यक्रम छात्रों को श्रीमद् भगवद् गीता से परिचित कराता है, जहाँ उन्हें दैनिक जीवन में इसके सिद्धांतों के अनुप्रयोगों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता हैं।

"अपने जीवन को बदलने का पवित्र अवसर – सीमाओं से परे जाओ!"

"दिव्य सत्संग में सम्मिलित होकर स्वयं को आशीर्वाद दें, जहाँ आप प्रबुद्ध ऋषियों के मार्गदर्शन में 'श्रीमद् भगवद् गीता' को सबसे सरल तरीके से सीख सकते हैं।"

हमे लिखें: thehimalayanmeditation@gmail.com

कई अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय जैसे हिंदू यूनिवर्सिटी ऑफ अमेरिका (फ्लोरिडा, यू एस ए), कॉलेज ऑफ वैदिक स्टडीज (बर्मिंघम, यूके) आदि श्रीमद् भगवद् गीता पढ़ाते हैं। भारतीय कॉलेज व विश्वविद्यालय जैसे कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय (हरियाणा, भारत) में श्रीमद् भगवद् गीता पर पाठ्यक्रम हैं। आईआईटी कानपुर (भारत) ने गीता पर एक वेबसाइट विकसित की है, जिसे "गीता सुपरसाइट" कहा जाता है।
श्रीमद् भगवद् गीता को सबसे पहले संस्कृत में बोला और लिखा गया था और आज तक इसका 175 भाषाओं में अनुवाद किया जा चुका हैं।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥

सभी धर्मों को त्याग कर, केवल मेरी ही शरण में आओ।
मैं तुम्हें सभी पापों से मुक्त करूँगा, भयभीत न हो ।

नवम्बर

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
३० शु. दशमी						देवुत्थान एकादशी १ कंस वध शु. दशमी
देवुत्थान एकादशी २ तुलसी विवाह शु. एकादशी/ द्वादशी	प्रदोष व्रत ३ शु. त्रयोदशी	मणिकर्णिका स्नान ४ शु. चतुर्दशी	देव दिवाली ५ गुरु नानक जयंती HM यज्ञ पूर्णिमा	मार्गशीर्ष ६ कृ. प्रतिपदा	७ कृ. द्वितीया	संकष्टी चतुर्थी ८ कृ. तृतीया/ चतुर्थी
९ कृ. पंचमी	१० कृ. षष्ठी	११ कृ. सप्तमी	१२ कृ. अष्टमी	१३ कृ. नवमी	१४ कृ. दशमी	उत्पन्न एकादशी १५ कृ. एकादशी
१६ कृ. द्वादशी	प्रदोष व्रत १७ कृ. त्रयोदशी	१८ कृ. त्रयोदशी	१९ कृ. चतुर्दशी	२० ● अमावस्या	२१ शु. प्रतिपदा	२२ शु. द्वितीया
२३ शु. तृतीया	२४ शु. चतुर्थी	विवाह पंचमी २५ शु. पंचमी	२६ शु. षष्ठी	२७ शु. सप्तमी	२८ शु. अष्टमी	२९ शु. नवमी

। सत्यं वदिष्यामि ।

मैं सत्य कहूँगा ।

himalayan meditation

प्रसिद्ध हस्तियों पर श्रीमद् भगवद् गीता का प्रभाव

इतिहास में कई असाधारण लोग जैसे अल्बर्ट आइंस्टीन, डॉ. अल्बर्ट श्विट्ज़र, हरमन हेस्स, राल्फ वाल्डो एमर्सन, एल्डस हक्सले, रुडोल्फ स्टीनर, निकोला टेस्ला और कई अन्य लोगों ने श्रीमद् भगवद् गीता पढ़ी हैं और इसके कालातीत ज्ञान से प्रेरित हुए हैं।

श्री नरेंद्र मोदी- भारत के वर्तमान प्रधान मंत्री

श्रीमद् भगवद् गीता हमारे विचारों को खोलती है, सोचने और अनुसंधान करने के लिए प्रेरित करती है। यह तर्क-वितर्क करने के लिए प्रोत्साहित करती है और दिमाग को खुला रखती है। जो कोई भी गीता से प्रेरित है वह सदैव स्वभाव से दयालु और लोकतांत्रिक होता है। श्रीमद् भगवद् गीता की सुंदरता इसकी गहराई, विविधता और सुनम्यता में है।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति, स्व. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

जब विक्रम साराभाई रिसर्च इंस्टीट्यूट में छात्र थे, तब उन्होंने डॉ. विक्रम साराभाई से प्रेरित होकर श्रीमद् भगवद् गीता पढ़ना आरंभ किया। अपनी आत्मकथा, "विंग्स ऑफ फायर" में, डॉ. कलाम ने श्रीमद् भगवद् गीता को विज्ञान के रूप में चित्रित कर, यह स्वीकारा कि, न केवल उनकी व्यक्तिगत मान्यताओं बल्कि उनके वैज्ञानिक प्रयासों को भी आकार देने में श्रीमद् भगवद् गीता का बड़ा हाथ है।

डॉ. एनी बेसेंट

एनी बेसेंट ने कहा कि आध्यात्मिक व्यक्ति को वैरागी होने की आवश्यकता नहीं है, दिव्य मिलन सांसारिक कामकाजों के बीच भी प्राप्त किया जा सकता है और बनाए रखा जा सकता है, कि उस मिलन में बाधाएँ हमारे बाहर नहीं बल्कि हमारे भीतर हैं - यही श्रीमद् भगवद् गीता का केंद्रीय पाठ है।

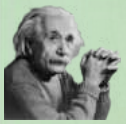

अल्बर्ट आइंस्टीन

जर्मनी में जन्मे सैद्धांतिक भौतिक विज्ञानी अल्बर्ट आइंस्टीन, जिन्होंने “थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी”, जो आधुनिक भौतिक विज्ञान के दो स्तंभों में से एक है, का विकास किया। वे, भगवान श्री कृष्ण की दी गई शिक्षाओं से बहुत प्रभावित थे और उन्होंने कहा है कि, जब मैं भगवद् गीता पढ़ता हूँ और विचार करता हूँ कि ईश्वर ने इस ब्रह्माण्ड की रचना कैसे की, तो बाकी सब कुछ अतिशयोक्तिपूर्ण लगता है।

हेनरी डेविड थोरो

एक अमेरिकी प्रकृतिवादी, निबंधकार, कवि और दार्शनिक, ने ‘वाल्डेन’ नामक अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में कई बार श्रीमद् भगवद् गीता का संदर्भ दिया है। पुस्तक के पहले ही अध्याय में उन्होंने लिखा, पूर्व के सभी अवशेषों की तुलना में श्रीमद् भगवद् गीता अधिक सराहनीय है। ‘श्रीमद् भगवद् गीता और मनु के सिद्धांतों’ जैसे प्राचीन ग्रंथों ने थोरो को भगवान और प्रकृति के संबंध को समझने में सहायता की।

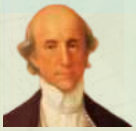

वॉरेन हेस्टिंग्स

वॉरेन हेस्टिंग्स ने चार्ल्स विल्किंस जिन्होंने पहली बार श्रीमद् भगवद् गीता का अंग्रेजी में अनुवाद किया, का पुरजोर समर्थन किया। उन्होंने प्रस्तावना में लिखा: "एक महान विचारधारा, तर्क और भाषा की उच्चता में अद्वितीयता का एक प्रदर्शन, जो मानवता के सभी धर्मों में से एकमात्र अमूल्य है।"

बुलेंट एसेविट

एक तुर्की राजनेता, कवि, लेखक, विद्वान और पत्रकार, 1974 और 2002 के बीच चार बार तुर्की के प्रधान मंत्री रहे। 1974 में, एक ब्रिटिश टेलीविजन इंटरव्यू में, उनसे पूछा गया कि किस चीज़ ने उन्हें साइप्रस में तुर्की सेना भेजने का साहस दिया। तब उन्होंने कहा कि उन्हें श्रीमद् भगवद् गीता से साहस मिला जिसने उन्हें सिखाया कि यदि कोई नैतिक रूप से सही है, तो उसे अन्याय से लड़ने में संकोच नहीं करना चाहिए।

सुनीता विलियम्स

भारतीय मूल की अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स के नाम किसी महिला द्वारा सबसे लंबे समय तक अंतरिक्ष में रहने का रिकॉर्ड है। जब वह अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आई.एस.एस) के सदस्य के रूप में अपने अभियान पर निकल रही थीं, तो वह अंतरिक्ष में अपने साथ गणेश जी की मूर्ति और श्रीमद् भगवद् गीता ले गईं। उन्होंने कहा - यह आध्यात्मिक चीजें हैं जिनसे आप अपने आप पर, अपने जीवन पर, अपने आस-पास की दुनिया पर विचार करते हैं और चीजों को एक अलग दृष्टि से देखते हैं। मुझे लगा कि यह बिल्कुल उचित है।

ह्यू जैकमैन

हॉलीवुड के जाने माने सुपरस्टार ह्यू जैकमैन समर्पित रूप से उपनिषदों और श्रीमद् भगवद् गीता का पालन करते हैं जो कि सनातन धर्म के मौलिक ग्रंथ हैं। एक इंटरव्यू में उन्होंने कहा, जिन धर्मग्रंथों का हम अनुसरण करते हैं वे पश्चिम और पूर्व का मिश्रण हैं और सुकरात से लेकर उपनिषद्, श्रीमद् भगवद् गीता तक कई अलग-अलग ग्रंथ हैं।

विल स्मिथ

हॉलीवुड के सुपरस्टार विल स्मिथ ने अपनी एक फिल्म के लिए भारत में प्रचार दौरे के दौरान घोषणा की कि वह श्रीमद् भगवद् गीता में अर्जुन से बहुत प्रभावित हैं। उन्होंने एक इंटरव्यू में कहा, मुझे यह इतिहास पसंद है। मैं अब तक 90 प्रतिशत श्रीमद् भगवद् गीता पढ़ चुका हूँ। इसे पढ़ने और यहाँ रहने से, मेरे भीतर के अर्जुन को ऊर्जा मिल रही है।

नारायण मूर्ति, सिलियन मर्फी, रॉबर्ट डाउनी जूनियर, जॉर्ज हैरिसन (बीटल्स के प्रसिद्ध कलाकार), थॉमस मर्टन, फिलिप ग्लास, टी. एस एलियट, वी.वी.एस लक्ष्मण (क्रिकेटर), एम.एस धोनी (क्रिकेटर) आदि जैसी कई प्रसिद्ध हस्तियाँ भी श्रीमद् भगवद् गीता से प्रेरित हुईं और कहा कि इस पुस्तक ने उनके जीवन को पूरी तरह से बदल दिया है।

नासा (NASA) ने भी वेद और उपनिषदों में विश्वास करना प्रारंभ कर दिया है, क्योंकि उन्होंने समझा है कि उनके विभिन्न प्रयोगों के परिणाम लगभग वही हैं जो हमारे महर्षियों ने हजारों वर्ष पहले वेद और उपनिषदों में वर्णित किए।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥

जहाँ भी योगेश्वर श्री कृष्ण हैं और जहाँ सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर अर्जुन हैं
वहाँ विजय है, यह निश्चित है।

दिस्मबर

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
	मोक्षदा एकादशी १ गीता जयंती HM महायज्ञ श्रीमद् भगवद् गीता पठन शु. एकादशी	प्रदोष व्रत २ शु. द्वादशी	हनुमान जन्मोत्सव (तेलुगु) ३ शु. त्रयोदशी	दत्तात्रेय जयंती ४ अन्नपूर्णा जयंती HM यज्ञ शु. चतुर्दशी/ पूर्णिमा	पौष ५ कृ. प्रतिपदा	६ कृ. द्वितीया
संकष्टी चतुर्थी ७ कृ. तृतीया	८ कृ. चतुर्थी	९ कृ. पंचमी	१० कृ. षष्ठी	११ कृ. सप्तमी	१२ कृ. अष्टमी	१३ कृ. नवमी
१४ कृ. दशमी	सफला एकादशी १५ कृ. एकादशी	१६ कृ. द्वादशी	प्रदोष व्रत १७ कृ. त्रयोदशी	१८ कृ. चतुर्दशी	हनुमान जन्मोत्सव (तमिल) १९ ● अमावस्या	२० ● अमावस्या
वर्ष का लघुतम दिवस २१ शु. प्रतिपदा	२२ शु. द्वितीया	२३ शु. तृतीया	२४ शु. चतुर्थी	२५ शु. पंचमी	२६ शु. षष्ठी	गुरु गोविन्द सिंह जयंती २७ शु. सप्तमी
२८ शु. अष्टमी	२९ शु. नवमी	पुत्रदा एकादशी ३० शु. दशमी/ एकादशी	पुत्रदा एकादशी ३१ शु. द्वादशी			

। सर्वेषां शान्तिर्भवतु ।

सब में शांति हो ।

himalayan meditation

श्रीमद् भगवद् गीता पर आधारित फिल्में

फिल्म: द मैट्रिक्स (फ्रेंचाइज़ी)
रिलीज़ का वर्ष: 1991-2021

सारांश: इस फिल्म का विषय है वास्तविकता को भ्रम से भिन्न देखना। यही विषय पूरी मूवी में हमे देखने को मिलता है। फिल्म में दिखाया गया है कि रेसिस्टेंस के पात्र लगातार "मैट्रिक्स" के अंदर और बाहर जाते हैं। यह एक ऐसा विषय है जिस पर श्रीमद् भगवद् गीता में लगातार बात की गई है। गीता में बताया गया है कि हम माया में फस कर झूठी धारणाएँ रखते हैं क्योंकि हम स्वयं को भौतिक शरीर मानते और आत्मा को देखने या अनुभव करने में सक्षम नहीं हैं। जैसे मनुष्य नए वस्त्र धारण करता है, पुराने वस्त्रों को त्याग देता है, वैसे ही आत्मा मृत्यु के बाद नए भौतिक शरीर को स्वीकार करती है और पुराने को त्याग देती है।

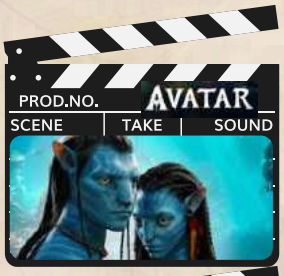

फिल्म: अवतार
रिलीज़ का वर्ष: 2009

सारांश: निर्देशक जेम्स कैमरून ने स्वीकार किया कि उनकी साई-फाई ब्लॉकबस्टर फिल्म 'अवतार' में सनातन धर्म के संदर्भ हैं। फिल्म के नाम का तो संस्कृत भाषा से सीधा संबंध है। साथ ही फिल्म के पात्र भगवान श्री कृष्ण या विष्णु की तरह नीली त्वचा वाले हैं। संस्कृत शब्द 'अवतार' की समानता भगवान विष्णु से जुड़ा है। फिल्म का मुख्य किरदार अंततः श्री कृष्ण की तरह ही अधर्म की बुरी ताकतों के खिलाफ धार्मिकता को पुनः स्थापित करता है। यह श्रीमद् भगवद् गीता के मूल संदेश को प्रदर्शित करता है।

फिल्म: इन्टरस्टेल्लर
रिलीज़ का वर्ष: 2014

सारांश: इंटरस्टेलर फिल्म का मूल विषय सार्वभौमिक सुपर-कांशियस्नेस, जो समय से परे है और सभी मनुष्यों को जोड़े हुए है, की प्राचीन वैदिक धारणा से मेल खाता है। फिल्म मिलर ग्रह पर टाइम डाईलेशन को दर्शाती है, जो श्रीमद् भगवद् गीता के अध्याय-8 में भगवान श्री कृष्ण द्वारा बताई गई समय की धारणा से मिलता जुलता है। समय का अनुभव सापेक्ष है जो अलग-अलग लोकों के लिए अलग-अलग है।

फिल्म: भगवद् गीता: भगवान का गीत
रिलीज़ का वर्ष: 1993

सारांश: यह एक भारतीय ड्रामा फिल्म है जो संस्कृत भाषा में लिखी गई है, साथ ही कुछ डायलॉग हिन्दी और तेलुगु भाषा में भी हैं। इस फिल्म के निर्माता टी. सुब्बिरामि रेड्डी हैं और इसका निर्देशन जी. वी. अय्यर ने किया था।

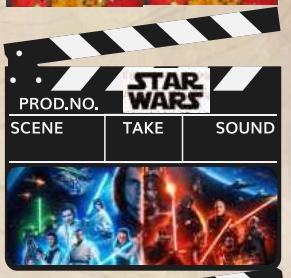

फिल्म: स्टार वार्स सीरीज
रिलीज़ का वर्ष: 1997 - 2019

सारांश: स्टार वार्स फ्रैंचाइज़ी वैदिक परंपराओं के साथ आश्चर्यजनक समानताएँ प्रदर्शित करती है, विशेष रूप से योडा और ल्यूक का गुरु-शिष्य संबंध, जो की वैदिक भारत की गुरु-शिष्य परंपरा की भांति है। यह ही नहीं योडा द्वारा दी गई शिक्षा श्रीमद् भगवद् गीता से मेल खाती है। फिल्म में दर्शाई गई ऊर्जा/शक्ति (फोर्स) की धारणा, परमात्मा या ब्रह्माण्ड के विषय में वैदिक सिद्धांतों के समान है। योडा की 'द फोर्स' की व्याख्या प्राचीन वैदिक और आधुनिक विज्ञान का मिश्रण है ।

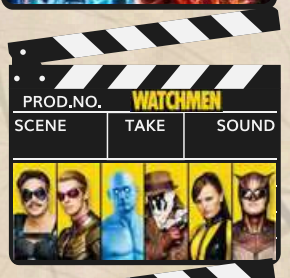

फिल्म: वॉचमैन
रिलीज़ का वर्ष: 2009

सारांश: फिल्म वॉचमेन में, डॉक्टर मैनहट्टन न केवल नीले रंग के दिखाए गए हैं किन्तु उन्हें श्री कृष्ण की भांति भी दर्शाया गया है। परमाणु बम के विस्फोट को देखते समय, श्रीमद् भगवद् गीता की एक पंक्ति, "अब मैं मृत्यु बन गया हूँ, विश्व का विनाशक," डॉक्टर मैनहट्टन के मस्तिष्क में गूंजती है, जो उन्हें श्री कृष्ण जैसा दर्शाती है।

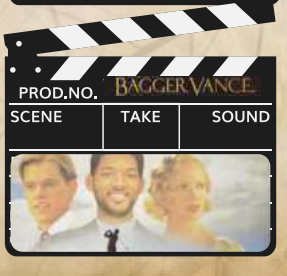

फिल्म: द लीजेंड ऑफ बैगर वेंस
रिलीज़ का वर्ष: 2000

सारांश: यह फिल्म 1931 के समय के जॉर्जिया को दिखाती है और यह जैक लेमन और लेन स्मिथ अभिनीत अंतिम फिल्म थी। इस फिल्म का विषय श्रीमद् भगवद् गीता पर आधारित है। इस फिल्म में ईश्वर (भगवान श्री कृष्ण की भांति) को नायक और योद्धा (अर्जुन की भांति) को ज्ञान देते दिखाया गया है। इन पात्रों को क्रमशः स्मिथ और डेमन द्वारा निभाया गया है।

हिमालयन मेडिटेशन द्वारा यज्ञ सेवा

यज्ञ ब्रह्माण्डीय परिवर्तन एवं संचरण की प्रक्रिया है

यज्ञसह प्रजा सृष्टि करि । प्रजापति चतुर्मुखधारी ।
यज्ञ कले हिँ अभिवृद्धि । कामना पूर्त्ति ओ समृद्धि ।।
एमन्त गुह्य तत्त्वमान । देले उपदेश अर्जुन ।।10।।
यज्ञकर्म कले अर्जुन । तृप्त हुअन्ति देवगण ।
देवता जेबे तृप्त होइ । अभीष्ट फल देईथाई ।
परष्णरकु करि तृप्त । रुहन्ति सर्वे आनंदित ।।11।।

श्रीमद् भगवद् गीता - 3.10, 3.11
(हिमालयी ऋषि द्वारा श्रीमद् भगवद् गीता का संथ सरल संस्करण)

चार मुख वाले ब्रह्मदेव ने यज्ञ करके ही सब कुछ सृष्ट किया और उन्होंने ऋषिओं और देवताओं को कुछ गुप्त रहस्य भी उजागर किए। यज्ञ करने से समृद्धि आती है और इच्छाओं की पूर्ती होती है। हे अर्जुन, जब मनुष्य यज्ञ कर्म करते हैं तब देवता प्रसन्न होते हैं और बदले में वे मनुष्यों की इच्छाओं की पूर्ती करके उन्हें आशीर्वाद देते हैं। इस प्रकार यज्ञ करके देवता और मनुष्य दोनों एक दूसरे को संतुष्ट करते हैं।

यज्ञ क्यों करें ??

क्या आप जानते हैं कि प्रत्येक देवता जीवन की कोई न कोई विशिष्ट आवश्यकताओं को पूर्ण करते हैं? उदाहरण के लिए, इंद्रदेव वर्षा लाते हैं, जलदेव जल प्रदान करते हैं, अग्निदेव अग्नि प्रदान करते हैं, और वायुदेव जीवनदायी वायु प्रदान करते हैं। यज्ञ एक पवित्र अनुष्ठान है, जो घर से परेशानियाँ दूर करता है और समृद्धि और खुशियाँ लाता है। आप अपने या अपने परिवार के सदस्यों के लिए यज्ञ में आहुतियाँ समर्पित कर सकते हैं। यदि आप ऐसा करना चाहते हैं तो कृपया उनके नाम और गोत्र हमें लिखकर भेजें। यज्ञ सेवा और भी बढ़े इसलिए आप यथासामर्थ्य इन यज्ञों में योगदान दे सकते हैं, यहाँ तक कि एक रुपया भी। इसके अतिरिक्त, आप दान देकर विशेष अवसरों पर अपने प्रियजनों के लिए यज्ञ की व्यवस्था भी करवा सकते हैं।

योगदान के लिए, आप हमारी UPI आईडी:
thehimalayanseva@sbi का उपयोग करें।

यज्ञ कैसे करें ??

हिमालयी ऋषि त्योहारों और पूर्णिमा पर यज्ञ करके परमात्मा, देवताओं और प्रकृति के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। प्रत्येक पूर्णिमा पर, भारत और विदेश में, 100 से भी अधिक साधक ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों ही मोड्स से यज्ञ करने के लिए एकजुट होते हैं, जिससे आशीर्वाद का एक सामूहिक शक्तिशाली स्रोत बनता है। ध्यान और निःस्वार्थ सेवा में अपना समय समर्पित करने के पश्चात, आप ऋषिओं से यज्ञ की विधि सीखने के लिए मार्गदर्शन भी प्राप्त कर सकते हैं।

UPI ID के लिए QR कोड
UPI ID: thehimalayanseva@sbi

विभिन्न स्थानों पर आयोजित यज्ञों की झलकियाँ

आप यज्ञ अग्नि की लपटों में देवताओं की उपस्थिति अनुभव कर सकते हैं

हमारा सबसे छोटा साधक हर पूर्णिमा पर एकाग्रचित्त होकर, अकेले एक या दो घंटे के लिए प्रभु से आशीर्वाद माँगते हुए यज्ञ करता है।

दिव्यता को अनुभव करें

himalayan meditation

हिमालयन मेडिटेशन द्वारा अष्टकम् सेवा

अष्टकम् अत्यधिक शक्तिशाली और दैवीय रूप से परिवर्तनकारी हैं। यह दिव्य अष्टकम् ऐसी आध्यात्मिक ऊर्जा प्रसारित करते हैं जो सामान्य शब्दों से परे हैं, अवर्णनीय हैं। अष्टकम् पाठ में लीन होने से कोई भी व्यक्ति भव्य और दिव्य उपस्थिति से अभिभूत हुए बिना नहीं रह पाता। यह उस कालातीत ज्ञान और दैवीय कृपा के प्रमाण है जो इन पवित्र छंदों के माध्यम से बहता है, जो हमारे सभी संताप हर कर हमें दिव्यता की ओर ले जाता है। प्रतिदिन भक्तिपूर्वक अष्टकम् पाठ करने से हमें श्री हरि (परमात्मा) के निवास की ओर मार्गदर्शन मिलता है।

इन अष्टकम् जैसे गणपति रक्षा कवचम्, हनुमान हृदय मालिका, भूतनाथ अष्टकम्, महामाया अष्टकम्, जीवाष्टकम्, मोक्ष स्तोत्रम्, कृष्ण क्रिया षटकम्, नारायण अष्टकम्, कारण षटकम्, पूर्णब्रह्म स्तोत्रम्, माँ मंगला अष्टकम् की दिव्यता को अनुभव करें और इनमें मग्न हो जाएँ। यह सभी हमारे यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध हैं।

बहुत से भक्तों ने इन अष्टकमों का नियमित जाप करने के पश्चात अपने अनुभवों को हमसे साझा किए हैं। वे अष्टकम् की पुस्तकें छापने, उन्हें वितरित करने और पास के मंदिरों में स्टिकर, फ्लेक्स बोर्ड, स्टील बोर्ड, संगमरमर बोर्ड की सेवा करने के लिए हमसे जुड़े हैं।

भक्त के अटूट प्रेम और समर्पण का एक उल्लेखनीय उदाहरण देखिये, एक भक्त ने श्री हरि की कृपा से 'जगन्नाथ रथ यात्रा' के दौरान दूरदर्शन-ओडिया चैनल पर अति सुंदर और शक्तिशाली 'पूर्णब्रह्म स्तोत्रम्' का सीधा प्रसारण करवाया।

विश्व भर में समर्पित भक्त सभी ज्योतिर्लिंगों, शक्तिपीठों, सभी धामों और अन्य बड़े मंदिरों में इन दिव्य अष्टकमों के स्टील और संगमरमर के बोर्ड स्थापित करने के हमारे मिशन में उत्साहपूर्वक सम्मिलित हुए हैं और हो रहे हैं।

श्री हरि की कृपा से, भक्तों ने कई प्रतिष्ठित शक्तिपीठों और मंदिरों में पवित्र अष्टकम् बोर्ड स्थापित किए हैं। इनमें कामाख्या शक्तिपीठ, देवीकूप शक्तिपीठ, वैद्यनाथ शक्तिपीठ, तारा तारिणी, विमला मंदिर, विशालाक्षी शक्तिपीठ, अट्टाहा शक्तिपीठ और अमरनाथ शक्तिपीठ सम्मिलित हैं। बहुत से मंदिरों में प्रतिदिन नित्य सेवा के रूप में इन अष्टकम् का पाठ किया जाता है। बहुत से सेवकों द्वारा स्थापित किए गए यह बोर्ड इन महत्वपूर्ण स्थानों पर आने वाले सभी भक्तों के साथ दिव्य ज्ञान साझा करते हैं और उनकी अपनी-अपनी आध्यात्मिक यात्रों पर उन्हें अग्रसर करते हैं। यह ही नहीं, जम्मू-कश्मीर में खीर माँ भवानी, हरि पर्वत पर शारिका माता मंदिर और वैष्णो देवी मंदिर, बरसाना व वृन्दावन के मुख्य मंदिर, काशी का कालभैरव मंदिर, जगन्नाथ पूरी मंदिर, व्यासदेव गुफा, शंकराचार्य पीठ, द्वारका, अमेरिका में कई मंदिर और कई अन्य महत्वपूर्ण मंदिरों में इन अष्टकम् बोड्र्स की सेवा को बहुत प्रेम से स्वीकारा गया।

दिव्य अष्टकमों का श्रवण करने के लिए हमारे यूट्यूब चैनल पर जाएँ।

अपनी इच्छा के अनुसार मंदिर सेवा में योगदान दें। आपके समर्थन की अत्यधिक सराहना की जाती है। यह हमारे पवित्र स्थानों की जीवंतता को बनाए रखने में सहायता करता है।

हमसे संपर्क करें
+91 8886344222,
+91 7506910073

हिमालयन मेडिटेशन द्वारा ज्योतिर्लिंग मंदिर सेवा

भूतनाथ अष्टकम् सेवा

प्रतिदिन भक्तिपूर्वक शक्तिशाली भूतनाथ अष्टकम् का जप करने से हमारे कष्ट कम होते हैं और महादेव शिव के दिव्य निवास स्थान की ओर हमारी यात्रा में सहायता मिलती है। शिव, देवों के देव हैं, पापों का नाश करने वाले और आंतरिक प्रकाश को प्रज्वलित करने वाले हैं, इस अष्टकम् का पाठ करने से वह हम पर दया करते हैं। अनगिनत साधकों ने निरंतर जप के माध्यम से इसके परिवर्तनकारी प्रभावों को अनुभव किया है। अब वे भूतनाथ अष्टकम् मंदिर सेवा से जुड़ गए हैं। विभिन्न मंदिरों में 300 से भी अधिक भूतनाथ अष्टकम् बोर्ड स्थापित किए गए हैं, जिनमें ज्योतिर्लिंग सम्मिलित हैं।

श्री केदारनाथ सेवा, रुद्रप्रयाग
भूतनाथ अष्टकम् स्टील और फ्लेक्स बोर्ड

ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग एवं ममलेश्वर महादेव सेवा
भूतनाथ अष्टकम् स्टील और फ्रेम बोर्ड

नागेश्वर ज्योतिर्लिंग सेवा, द्वारका
भूतनाथ अष्टकम् स्टील बोर्ड

महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग सेवा
भूतनाथ अष्टकम् स्टील बोर्ड

काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग सेवा, वाराणसी
भूतनाथ अष्टकम् स्टील बोर्ड

घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग सेवा, संभाजी नगर
भूतनाथ अष्टकम् स्टील बोर्ड

रामनाथस्वामी ज्योतिर्लिंग सेवा, रामेश्वरम
भूतनाथ अष्टकम् स्टील बोर्ड

वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग सेवा, देवघर
भूतनाथ अष्टकम् स्टील बोर्ड

त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग सेवा, नासिक
भूतनाथ अष्टकम् स्टील बोर्ड

भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग सेवा, पुणे
भूतनाथ अष्टकम् स्टील बोर्ड

भक्त अपनी भक्ति, आध्यात्मिक विकास और सामुदायिक जुड़ाव की अभिव्यक्ति के रूप में निष्काम मंदिर सेवा (निःस्वार्थ सेवा) में संलग्न होते हैं। यह कर्म योग का अभ्यास करने, चेतना को उन्नत करने, परंपराओं को संरक्षित करने, स्वयं को कार्मिक छापों (संस्कारों) से मुक्त करने और ईश्वर के प्रति समर्पण करने का एक तरीका है।

मंदिर सेवा में योगदान के लिए संपर्क करें।
+91 8886344222, +91 7506910073

himalayan meditation

हिमालयन किड्स

आपके बच्चों के शारीरिक और मानसिक उन्नति के लिए

"CATCH THEM WHILE YOUNG ....."

हमारा दृष्टिकोण और लक्ष्य

"हिमालयन किड्स" सचेत परवरिश की ओर पहला कदम
माता-पिता अपने बच्चों की जड़ें सशक्त करते हैं और उनके सपनों को उड़ान भी देते हैं।
प्रतिदिन 'हिमालयन किड्स' के साथ सिर्फ पाँच मिनट आपके बच्चे के जीवन को हमेशा के लिए परिवर्तित कर सकते हैं।
"हिमालयन किड्स" प्रोग्राम में, बच्चे ध्यान का अभ्यास करते-करते एक 'सुपर-किड' बन जाते हैं।

"और हमारा प्रयास है कि आपके बच्चे में इन सभी गुणों को विकसित किया जा सके।"

नेतृत्व गुण

अच्छी नींद

स्वस्थ खाना

स्थिरता	एकाग्रता
स्मृति	दयालुता
एक लक्ष्य	धैर्य
कोई स्क्रीन टाइम नहीं	रोग प्रतिरोधक शक्ति

बालयोगम् और बालबोधनम् प्रोग्राम

बच्चों के लिए हिमालयन मेडिटेशन के साथ रोमांचक और उत्साह भरा एक घंटा

एक अत्यंत लोकप्रिय पहल, जो नियमित रूप से भारत, अमेरिका, यूके, डेनमार्क, दक्षिण अफ्रीका, सिंगापुर और कई अन्य देशों के विभिन्न हिस्सों से बच्चों को आकर्षित कर रही है। इस प्रोग्राम में सूर्य-नमस्कार, सुपर ब्रेन योग, माइंडफुलनेस मेडिटेशन, चरित्र निर्माण, श्लोकों का उच्चारण, ध्यान लगाना, समय प्रबंधन, 'वैदिक भारत की विज्ञान और प्रौद्योगिकी' पर जानकारी, मंदिर की वास्तुकला के आश्चर्यजनक तत्व, रामायण और महाभारत पर विशेष सत्र जैसी विविध गतिविधियाँ शामिल हैं।

बच्चों ने हमारी कल्पना और अपेक्षाओं की सभी सीमाएँ पार कर ली हैं। हिमालयन मेडिटेशन ध्यान पद्धतियों को अपनाने से उनकी दैनिक दिनचर्या में अनुशासन और स्थिरता आई है। उन्होंने कम आयु में ही श्रीमद् भगवद् गीता के सटीक जाप में भी महारत प्राप्त कर ली हैं और कृतज्ञता पर केंद्रित हमारी 'भारतीय संस्कृति' को उत्साहपूर्वक अपनाया और उसका गौरव बढ़ाया है। हमारे बच्चे विज्ञान, गणित, चिकित्सा, मंदिर कला और वास्तुकला के क्षेत्र में प्राचीन भारत की उन्नत तकनीकों से प्रभावित हैं। अपनी जिज्ञासा और आकर्षण से बच्चों ने वैदिक संस्कृति को गहराई से समझने का प्रयास किया। हम बच्चों के मन, शरीर और आत्मा का पोषण करने में बहुत गर्व अनुभव करते हैं। कार्यक्रम के समापन पर बच्चों को प्रमाण पत्र एवं मेडल से पुरस्कृत किया जाता है। यह निःस्वार्थ सेवा सभी में खुशी और संतुष्टि की भावना लाती है।

इसे पढ़ना न भूलें:

- हिमालयन किड्स एल्बम
- बच्चों की एक्टिविटीज़ और ध्यान कार्यक्रम

"Himalayan Kid's Meditation"

जीवन भर का मूल्यवान उपहार है, जिसे आप अपने बच्चे को प्रदान कर सकते हैं।

हमसे संपर्क करें +91 8886344222, +91 7506910073

himalayan meditation

हिमालयन मेडिटेशन समारोह और कार्यक्रम

आनंद को अनुभव करें, दिव्यता को अनुभव करें : सेवा, स्वाध्याय, साधना, और सत्संग (4स) हिमालयन मेडिटेशन के साथ

जनवरी
- मकर संक्रांति - सुबह सूर्य ध्यान
- योगिक तरीके से समय प्रबंधन - 3 दिन की चुनौती
- पौष पूर्णिमा यज्ञ
- अष्टकम् पाठ

फरवरी
- महाशिवरात्रि - महायज्ञ, भजन, अभिषेकम्, और ध्यान
- क्रोध पर नियंत्रण - 21 दिन की चुनौती
- 7 दिन का नेतृत्व प्रबंधन प्रोग्राम
- माघ पूर्णिमा यज्ञ
- अष्टकम् पाठ

मार्च
- 41 दिन की मेधा नाड़ी - अनंत स्मृति और बुद्धि चुनौती
- चैतन्य महाप्रभु जयंती - लीला ध्यान
- फाल्गुन पूर्णिमा यज्ञ

अप्रैल
- श्रीराम नवमी यज्ञ, मंत्र ध्यान
- हनुमान जन्मोत्सव - मंत्र ध्यान
- निद्रा विकार व दुःस्वप्न - 27 दिन का प्रोग्राम
- चैत्र पूर्णिमा यज्ञ

मई
- आंतरिक असुर का विनाश - 27 दिन की चुनौती
- मदिरा, तम्बाकू एवं निकोटिन से मुक्ति - 41 दिन की चुनौती
- वैशाख पूर्णिमा यज्ञ
- अष्टकम् पाठ

जून
- जगन्नाथ रथ यात्रा - ब्रह्मांड ध्यान
- तनाव, दुश्चिंता और मानसिक अवसाद - 41 दिन की चुनौती
- आंतरिक परिवर्तन - 27 दिन की चुनौती
- ज्येष्ठ पूर्णिमा यज्ञ

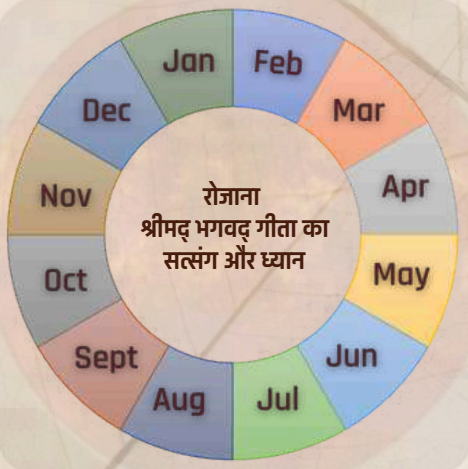

जुलाई
- क्षमता व योग्यता का विकास - 27 दिन की चुनौती
- योगिक निद्रा - एक कदम आगे - 21 दिन की चुनौती
- गुरु पूर्णिमा (आषाढ़) यज्ञ और उत्सव

अगस्त
- श्री कृष्ण जन्माष्टमी यज्ञ, भजन, अभिषेकम्, ध्यान, और बच्चों का उत्सव
- कुण्डलिनी जागरण - 84 दिनों में आंतरिक निष्क्रिय शक्ति को जगाना
- श्रावण पूर्णिमा यज्ञ
- ऋषि पंचमी - योगियों के सहज साधना को जाने

सितंबर
- त्रितीय नयन जागरण - 84 दिन की चुनौती
- भाद्रपद पूर्णिमा यज्ञ
- गणपति रक्षा कवचम् पाठ
- महामाया अष्टकम् पाठ

अक्टूबर
- भक्तिरस - 41 दिन भक्ति सेवा में
- कार्तिक माह 5 बजे की ध्यान चुनौती
- शरद पूर्णिमा - चंद्र ध्यान
- दिवाली यज्ञ और उत्सव
- आश्विन पूर्णिमा यज्ञ

नवंबर
- कार्तिक माह 5 बजे की ध्यान चुनौती
- अतीत को फिर से लिखें और गहन सफाई - 27 दिन की चुनौती
- कार्तिक पूर्णिमा यज्ञ

दिसंबर
- गीता जयंती महायज्ञ - संपूर्ण संस्कृत और संथ सरल गीता पठन
- हतोत्साहित और अत्यधिक सोच पर नियंत्रण - 21 दिन की चुनौती
- मार्गशीर्ष पूर्णिमा यज्ञ

हिमालयन मेडिटेशन 2025 समारोह और कार्यक्रम

हमे हिमालयी ऋषियों द्वारा सावधानीपूर्वक तैयार किया गए, ध्यान कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए बहुत प्रसन्नता हो रही है। इन कार्यक्रमों की प्राचीन वैदिक ध्यान तकनीकें सरल अपितु शक्तिशाली हैं जो आपके जीवन में भौतिक और आध्यात्मिक सफलता दोनों लाती हैं। इनमें 'आत्मशोधनम्,' 'अभयदानम्,' 'नवनिर्माणम्,' और 'बालबोधनम् प्रोग्राम' का 12-दिन का पाठ्यक्रम सम्मिलित है। पिछले एक वर्ष में इन रूपांतरणात्मक कार्यक्रमों में सक्रियता से भाग लेने वाले 2,000 से अधिक व्यक्तियों की तरह आप भी इनके गहरे प्रभाव को व्यक्तिगत रूप से अनुभव कर सकते हैं। आपके आध्यात्मिक और व्यक्तिगत विकास के लिए हिमालयन मेडिटेशन द्वारा कार्यक्रमों की श्रृंखला एक अनुशासित जीवन जीने का अनूठा अवसर प्रदान करती है। इन कार्यक्रमों के विषय में विस्तार से जानने के लिए thehimalayanmeditation@gmail.com पर हमे लिखें।

प्रसादम

बिना प्रेसेर्वटिवेस या आर्टिफिशियल एडिटिव्स डाले सावधानीपूर्वक पकाए गए सात्त्विक आहार के उत्कृष्ट स्वाद और पोषण का आनंद लें। यह पौष्टिक आहार शुद्ध सामग्रियों से बना हुआ, भगवान को अर्पित किया हुआ और पवित्र मंत्रों से समृद्ध है। अत्यंत प्रेम और पवित्रता से पकाया यह भोजन आपके स्वास्थय को बढ़ावा देता है। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें ।

हमारे कार्यक्रम मुंबई, दिल्ली, चंडीगढ़, बैंगलोर, अमेरिका, इंग्लैंड, इंडोनेशिया, सिंगापूर, साउथ अफ्रीका और डेनमार्क सहित विभिन्न स्थानों पर आयोजित होते हैं जो आध्यात्मिक और व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देने के लिए समर्पित हैं। इनमें अष्टकम् पुस्तकों का वितरण जैसी बहुत सी सेवाएँ की जाती हैं। हमारे कैलेंडर, वैदिक भारत के विषय में विस्तार से वर्णन करते हैं। इसके अतिरिक्त, हम हिमालयन प्रसाद का वितरण भी करते हैं, जो इस पवित्र क्षेत्र से आशीर्वाद के रूप में हमारी आत्मा को पोषण देने वाला है। हम शैक्षणिक संस्थानों जैसे स्कूल, कॉलेज तथा कॉर्पोरेट क्षेत्र में युवाओं को ग्रूप मेडिटेशन के माध्यम से माइन्डफुलनेस और आंतरिक शांति के लिए वैदिक ध्यान तकनीक सिखाते हैं। इसके अतिरिक्त, हम व्यक्ति के समग्र कल्याण के लिए शारीरिक व्यायाम के साथ ध्यान को एकीकृत करने के महत्व पर जोर देते हैं और इसीलिए फिटनेस केंद्रों के साथ सहयोग कर वहाँ भी ध्यान कार्यक्रम आयोजित करते हैं।

ये आयोजन प्राचीन शिक्षाओं के प्रसार और विविध समुदायों के भीतर आध्यात्मिक संवर्धन को बढ़ावा देने के प्रति हमारी अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं।

आयोजनों और कार्यक्रमों के विषय में अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें +91 8886344222, +91 7506910073

himalayan meditation

हिमालयन मेडिटेशन का वार्षिक कैलेंडर - वर्ष 2025

आनंद को अनुभव करें, दिव्यता को अनुभव करें : सेवा, स्वाध्याय, साधना, और सत्संग (4स)
हिमालयन मेडिटेशन के साथ

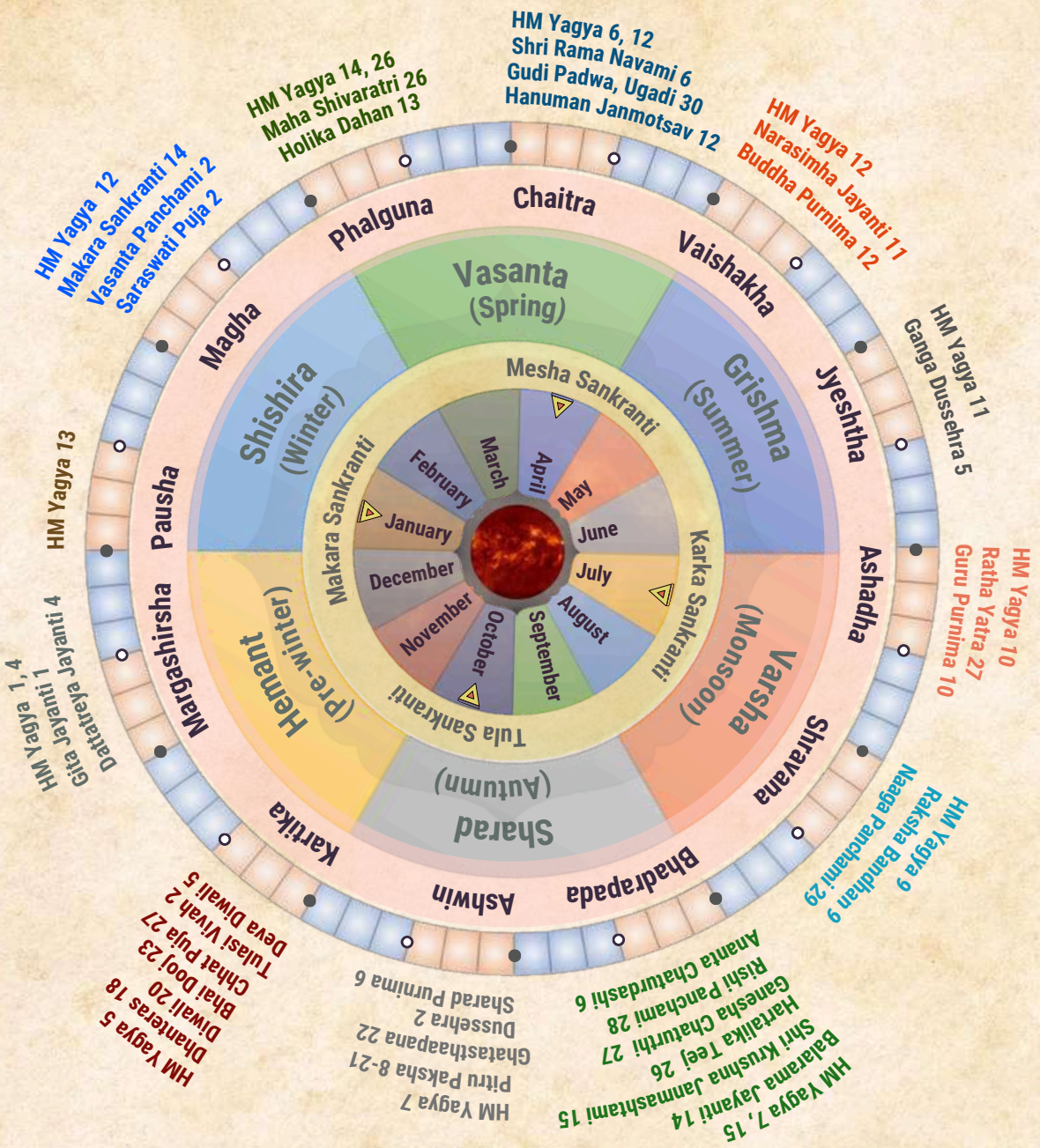

- कृपया अधिक जानकारी के लिए हमारी वेबसाइट thehimalayameditationadipurush.com पर जाएँ।
- सोशल मीडिया के माध्यम से जुड़ने के लिए हमारे इंस्टाग्राम और फेसबुक पेज पर जाएँ।
- हमारे उद्देश्य का समर्थन करने के लिए हमारी यूपीआई आईडी: thehimalayanseva@sbi के साथ दान करें।
- संपर्क करें:
  +91 8886344222, +91 7506910073
- हमे लिखें:
  thehimalayanmeditation@gmail.com,
  ancient.bharat.calendar@gmail.com

अपने जीवन को बदलने का पवित्र अवसर - सीमाओं से परे जाओ

"दिव्य सत्संग में सम्मिलित होकर स्वयं को आशीर्वाद दें, जहाँ आप प्रबुद्ध ऋषियों के मार्गदर्शन में 'श्रीमद् भगवद् गीता' को सबसे सरल तरीके से सीख सकते हैं।"

हमे लिखें : thehimalayanmeditation@gmail.com

himalayan meditation

! मंगलम् भवतु !